भेद-भरी-सुन्दरी





भेद-भरी सुन्दरी



सचित्र-जासूसी उपन्यास

लेखक—
पण्डित ईश्वरीप्रसाद शर्मा
भूतपूर्व मनोरञ्जन-सम्पादक, आरा



प्रकाशक—
राघवप्रसाद गुप्त
आनन्द पुस्तक माला कार्यालय
पूर्णिया।

प्रथम बार १००० } १९२६ { मूल्य ॥=)
रेशमी जि०

प्रकाशक—
राघवप्रसाद गुप्त
आनन्द-पुस्तक-माला कार्यालय
पूर्णिया।



मुद्रक—किशोरीलाल केडिया
वणिक् प्रेस
१, सरकार लेन,
कलकत्ता

समर्पण



यह पुस्तक श्रीमान् कुंअर गंगानन्द
सिंहजी एम० ए० को उनकी
हिन्दी-हितैषिता तथा अनेक
कृपाओंके उपलक्षमें प्रकाशक
द्वारा सादर समर्पित।

प्रकाशक—
राघवप्रसाद गुप्त
आनन्द पुस्तक-माला कार्यालय
पूर्णिया।



मुद्रक--किशोरीलाल केडिया
वणिक् प्रेस
१, सरकार लेन,
कलकत्ता

समर्पण

यह पुस्तक श्रीमान कुंअर गंगानन्द सिंहजी एम० ए० को उनकी हिन्दी-हितैषिता तथा अनेक कृपाओंके उपलक्षमें प्रकाशक द्वारा सादर समर्पित।



भूमिका



मिस्टर ब्लेकके जासूसी उपन्यासोंकी हिन्दीमें बडी च है। उनकी कितनी ही कहानियोंको हम पहले भी हिन्दीमें ला चुके हैं और हिन्दीवाले उन्हे बडे शौकसे पढते भी हैं। आज हम ऐसी ही एक कहानी अंग्रेजीसे व्दथा करके फिर हिन्दी-पाठकोंके सामने रखते हैं। आशा है कि इसको भी पाठक प्रेमसे पढेंगे।

बडी खुशीकी बात है कि विहारमें एक और प्रकाशन सस्था खुली। उसके सञ्चालकोंके अनुरोधसे हमने यह पहली किताब उसको दी है। हमने सोचा है कि यदि समय अनुकूल रहा तो इस सस्थाको हम और भी कुछ लिखकर देंगे।

आरा
दिसम्बर १९२५

ईश्वरीप्रसाद शर्मा

भेद-भरी सुन्दरी

पहला परिच्छेद

मिस जैक्सन

उस दिन लन्दनमें बड़े जोरका कुहासा पड़ रहा था। रातको अंधेरी, कुहासेके कारण, और भी बढ़ गयी थी। पिक्डली सर्कससे तमाशा देखकर घर लौटते समय मि० ब्लेकका नौकर टिङ्कर कुहासेके मारे रास्ता भूलकर न जाने कहा आ पहुचा। उसे कुछ सूझता ही नहीं था कि किधर जाये। उस रास्तेके दोनों ओरके मकान कुहासेसे ढके हुए थे और कहीं कोई गाडी या आदमी चलता नहीं दिखाई देता था। टिङ्कर बड़े

चक्करमे पडा। इसी समय उसने थोडी दूरपर एक जगह रोशनी देखी। यह देखकर वह उसी ओर लपका और झट उस मकानके पास आ पहुचा, जिसके दरवाजेपर एक नौजवान लडकी हाथमें लालटेन लिये खडी थी। पास पहुंचते ही उसने बड़ी नरमीके साथ कहा—"मैं रास्ता भूल गया हू, कृपाकर मुझे थोड़ी देरके लिये विश्राम करनेकी जगह दे दो, तो अच्छा है। रास्तेमें मारे कुहासेके कुछ भी नजर नहीं आता।"

उस लडकीने हलकी-सी मुस्कुराहटके साथ कहा—"आओ, जल्दीसे भीतर चले आओ।"

टिङ्कर तो इसके लिये तैयार ही बैठा था। वह झट भीतर जानेके लिये तैयार हो गया। इतनेमें उस लडकीने उसका हाथ थाम लिया और उसे घसीटकर झटपट भीतर कर दिया। इसके बाद उसने दरवाजेको धीरेसे बन्द करके उसमें ताला लगा दिया। टिङ्कर उसके इस प्रकार एक अपरिचित पुरुषका हाथ थाम लेनेपर अचम्भा करने लगा, पर मौकेको देखकर उसने चुप रहना ही अच्छा समझा।

ताला बन्द करके वह लडकी फिर टिङ्करके पास चली आयी और उसे जीनेकी राह ऊपर ले चली। टिङ्करने पूछा—"तुम मुझे ऊपर क्यों लिये जा रही हो? मैं नीचे ही कहीं पड रहूगा। मुझे यहां रहने दो।"

वह लडकी झुझलाहटके साथ बोली—"बेवकूफ कहींके! बहस मत करो, चुपचाप मैं जैसा कहती हू, वैसा करो।"

लाचार टिङ्कर विना कान पूंछ हिलाये उसके पीछे-पीछे सीढियां तै करता हुआ ऊपरके बडे कमरेमें आ पहुंचा। वह कमरा बडी ही खूबसूरतीके साथ सजा हुआ था। वहां दो कुरसियां पडी हुई थी। एकपर आप बैठकर उसने दूसरीपर टिङ्करको बैठनेके लिये कहा। टिङ्करने कुरसीपर बैठते ही कहा—"मुझे तुम यहांतक क्यों ले आयी हो, यह मेरी समझमें नहीं आता।"

लडकी—"क्योंकि मैंने देखा कि तुम कुहासेमें नाहक इधर-उधर भटक रहे हो। तुम्हारा यह दुःख मुझसे देखा नहीं गया। अगर मैं तुम्हें यहां नही ले आती तो तुम रात भर भटकते ही रहते।"

यद्यपि उसने यह बात बडी स्वाभाविक रीतिसे कही,तथापि टिङ्कर समझ गया कि वह झूठ बोल रही है। टिङ्कर ससारके सुप्रसिद्ध जासूस रावर्ट सेक्सटन ब्लेकका सहकारी था—किसी के दम-झांसेमें यों आनेवाला जीव थोडा ही था? उसने अब उस लडकीसे बातें करना बन्द कर उस कमरेके चारों तरफ नजर दौडानी शुरू की। उसने देखा कि सामने एक आलमारी किताबोंसे भरी हुई रखी है। उसके पास ही मेजपर किसी नौजवानका एक फोटो पडा हुआ है। उसके निकट ही एक चुरुटका बक्स भी रखा हुआ है। यह देख वह समझ गया कि अवश्य यह कमरा किसी पुरुषके रहनेका है, क्योंकि इसकी सजावटमें जनानापनका कहीं नामोनिशानतक नहीं है। वह यही सोच रहा था कि एकाएक उस लडकीने कहा—"कहो तो मैं तुम्हारे लिये थोडी

चक्करमे पडा। इसी समय उसने थोडी दूरपर एक जगह रोशनी देखी। यह देखकर वह उसी ओर लपका और झट उस मकानके पास आ पहुचा, जिसके दरवाजेपर एक नौजवान लडकी हाथमें लालटेन लिये खडी थी। पास पहुंचते ही उसने बडी नरमीके साथ कहा—"मैं रास्ता भूल गया हू, कृपाकर मुझे थोडी देरके लिये विश्राम करनेकी जगह दे दो, तो अच्छा है। रास्तेमें मारे कुहासेके कुछ भी नजर नहीं आता।"

उस लडकीने हलकी-सी मुस्कुराहटके साथ कहा—"आओ, जल्दीसे भीतर चले आओ।"

टिङ्कर तो इसके लिये तैयार ही बैठा था। वह झट भीतर जानेके लिये तैयार हो गया। इतनेमें उस लडकीने उसका हाथ थाम लिया और उसे घसीटकर झटपट भीतर कर दिया। इसके बाद उसने दरवाजेको धीरेसे बन्द करके उसमें ताला लगा दिया। टिङ्कर उसके इस प्रकार एक अपरिचित पुरुषका हाथ थाम लेनेपर अचम्भा करने लगा, पर मौकेको देखकर उसने चुप रहना ही अच्छा समझा।

ताला बन्द करके वह लडकी फिर टिङ्करके पास चली आयी और उसे जीनेकी राह ऊपर ले चली। टिङ्करने पूछा—"तुम मुझे ऊपर क्यों लिये जा रही हो? मैं नीचे ही कहीं पड रहूगा। मुझे यहीं रहने दो।"

वह लडकी झ झलाहटके साथ बोली—"बेवकूफ कहींके! बहस मत करो, चुपचाप मैं जैसा कहती हू, वैसा करो।"

लाचार टिङ्कर विना कान पूछ हिलाये उसके पीछे-पीछे सीढियां तै करता हुआ ऊपरके बडे कमरेमें आ पहुंचा। वह कमरा बडी ही खूबसूरतीके साथ सजा हुआ था। वहां दो कुरसियां पडी हुई थी। एकपर आप बैठकर उसने दूसरीपर टिङ्करको बैठनेके लिये कहा। टिङ्करने कुरसीपर बैठते ही कहा—"मुझे तुम यहांतक क्यों ले आयी हो, यह मेरी समझमें नहीं आता।"

लडकी—"क्योंकि मैंने देखा कि तुम कुहासेमें नाहक इधर उधर भटक रहे हो। तुम्हारा यह दुःख मुझसे देखा नहीं गया। अगर मैं तुम्हें यहां नहीं ले आती तो तुम रात-भर भटकते ही रहते।"

यद्यपि उसने यह बात बडी स्वाभाविक रीतिसे कही,तथापि टिङ्कर समझ गया कि वह झूठ बोल रही है। टिङ्कर संसारके सुप्रसिद्ध जासूस राबर्ट सेक्सटन ब्लेकका सहकारी था—किसी के दम झांसेमें यों आनेवाला जीव थोडा ही था? उसने अब उस लडकीसे बातें करना बन्द कर उस कमरेके चारो तरफ नजर दौडानी शुरू की। उसने देखा कि सामने एक आलमारी किताबोंसे भरी हुई रखी है। उसके पास ही मेजपर किसी नौजवानका एक फोटो पडा हुआ है। उसके निकट ही एक चुरुटका बक्स भी रखा हुआ है। यह देख वह समझ गया कि अवश्य यह कमरा किसी पुरुषके रहनेका है, क्योंकि इसकी सजावटमें जनानापनका कहीं नामोनिशानतक नहीं है। वह यही सोच रहा था कि एकाएक उस लडकीने कहा—"कहो तो मैं तुम्हारे लिये

सी चाय या काफी ले आऊं, क्योंकि तुम घण्टों सर्दीमें भटकते रहे हो।"

टिङ्करने कहा—"माफ करो, मुझे सर्दी नहीं लगी है। मैं काफी तो छूतातक नहीं।"

टिङ्करने सोचा कि कहीं इस लडकीके दिलमें दगा होगी, तो यह मुझे काफी पिलाकर बेहोश कर दे सकती है, इसीलिये वह साफ इनकार कर गया। उस लडकीने उसका यह मतलब ताड़ लिया या नहीं, यह तो हम नहीं कह सकते, पर उसने न जाने क्या सोचकर मेजपर रखा हुआ वह फोटो वहासे हटाकर आलमारीके अन्दर रख दिया। टिङ्करने उसे ऐसा करते देखा, पर कुछ पूछ न सका। हा, मन-ही मन उसकी इस कारवाईपर उसे सन्देह जरूर हुआ।

अबके फिर उसीने बात छेडी। वह बोली—"क्या तुम अबतक यह नहीं समझ सके हो कि तुम कहा चले आये हो?"

टिङ्करने कहा—"नहीं। मुझे दिशा-भ्रम हो गया है।"

लडकी—"तुम ब्राइन्सटन-स्क्वायेरमें चले आये हो।"

टिङ्कर—"अरे,तो क्या मैं सचमुच इतनी दूर आ पहुचा हू?"

इसी समय एकाएक नीचेसे घण्टीकी आवाज सुनाई दी, कान लगाकर सुनने लगा। उसे ऐसा मालूम हुआ मानों कई आदमी धीरे-धीरे बातें करते हुए ऊपर सीढीपर चढ़ रहे हैं। इसी समय टिङ्करने कनखियोंसे देखा कि वह लडकी भी कुछ बेचैन-सी हो रही है, पर उससे अपनी चञ्चलता छिपानेके लिये

दूसरी ओर देख रही है। अकस्मात् कोई भारी चीज जमीनपर गिरनेकी आवाज सुनाई दी। टिङ्करने घबराहटके साथ पूछा—"यह क्या गिरा?"

पास ही आगकी अगीठी जल रही थी—उसीके कोयलोंको एक लोहेकी पतली छडीसे उकसाते हुए उस लडकीने कहा—"कहा गिरा? मैंने तो कुछ भी नहीं सुना।" इसके बाद दरवाजेकी ओर देखती हुई वह बोली—"अगर तुम्हें किसी तरहका डर मालूम होता हो तो तुम जा सकते हो।"

अब तो टिङ्करका माथा ठनका। उसने सोचा कि जरूर इस मकानके भीतर कोई भयानक काण्ड हो रहा है, तभी यह लडकी मुझे इस तरह खातिरसे भीतर ले आनेके बाद एकाएक बाहर जानेको कह रही है। फिर जब धडाकेकी आवाज मेरे कानोंमें पड़ी, तब यह झूठ क्यों बोली कि मैंने सुनी ही नहीं? औरतकी जाति तो भेद जाननेके लिये कान खडे किये रहती है, फिर यह उस समय चुपचाप कोयलोंके साथ खिलवाड क्यों करने लगी? टिङ्करने सोचा कि अब तो बिना पूरा भेद जाने यहासे जाना ठीक नहीं, पर फिर तुरत ही उसे इस बातका भी ख्याल हो आया कि कहीं इस लडकीके कहे मुताबिक मैं यहासे नहीं गया और नीचेवाले आदमी यहा आकर मुझसे पूछने लगे कि मैं यहा कैसे आया, तो मैं क्या कहूगा? कौन इस बातपर विश्वास करेगा कि यह लडकी मुझे आपसे आप यहातक ले आयी है? इसके यह भी तो निश्चय नहीं कि जरूर यहा कुछ गोलमाल

है। इसलिये उतावली करके फन्देमें पडना और मि० ब्लेकका नाम भी बदनाम करना उचित नहीं है। यही सब सोचकर वह थोडी देर चुप रहा और कान लगाये सुनता रहा, पर फिर उसे कोई आवाज नहीं सुनाई दी।

अन्तमें उसने कहा—"अच्छा, तो अब मैं चलता हूं। आशा है कि कुहासा भी कम हो गया होगा। क्या आप कृपाकर मुझे अपना नाम बतायेंगी, जिससे मैं यह जान लूं कि मेरी उपकारिणी कौन है?"

यह सुन उस लडकीने कहा—"मुझे लोग मिस जैक्सन कहते हैं।" यह कह उसने धीरेसे दरवाजा खोल दिया और उसे साथ लिये हुई नीचे उतर आयी।

घरसे बाहर निकल कर टिङ्करने मिस जैक्सनको सलाम कर धन्यवाद दिया और बेकर-स्ट्रीटकी राह ली। जासूसी कहानियोंके पाठक जानते ही हैं कि मि० ब्लेकका मकान बेकर-स्ट्रीटमें ही है। परन्तु उस समयतक, कुहासा वैसा ही घना था, इसलिये उसे रास्ता मालूम करनेमें बडी दिक्कत होने लगी। अब तो वह घबराया और उसके जीमें आया कि फिर चलकर मिस जैक्सनसे ही पूछूं कि मैं किस रास्ते बेकर-स्ट्रीटमें पहुंच सकता हूं।

यही सोचकर वह फिर पीछे लौटा और दरवाजेपर पहुंच कर घंटी बजाना ही चाहता ही था कि इसी समय उसके कानोंमें किसी औरतके चीखनेकी आवाज पडी। उसे पूरा निश्चय हो गया कि यह आवाज मिस जैक्सनके ही गलेकी है। पर उसने



कोई तरकीब चुपचाप उस घरके अन्दर घुसनेकी नहीं देखी। उसे पास पड़ोसके लोगोंको जगाकर पूछना भी अच्छा नहीं मालूम हुआ। इसलिये उसने लाचार घर लौट जाना ही स्थिर किया।

बहुत ही घूमघुमौए रास्तेसे भूलता-भटकता हुआ वह घर पहुंचा। रात बहुत बीत गयी थी। इसलिये उसने किसीको जगाया नहीं और चुपचाप एक जगह जाकर सो रहा। सवेरे ही उठकर उसने कौतूहल वश ग्राइन्स्टन-स्क्वायेरकी राह ली।

पर ग्राइन्स्टन क्वायेरमें हर जगह ढूंढनेपर भी उसे वह मकान नहीं मिला, जिसमें वह गत रात्रिको थोड़ी देरके लिये मिस जैक्सनका अतिथि हुआ था। अब तो वह बड़े चक्करमें पड़ा। उसके मनमें तरह-तरहके सवाल पैदा होने लगे। गत रात्रिके भेदका भण्डाफोड़ करनेके लिये उसका चित्त व्याकुल होने लगा।



टिङ्करने कहा,—"शायद सफरमें ज्यादा खर्च हो गया है, इसीलिये उन्होंने एक पुरानी मशीन ले ली है।"

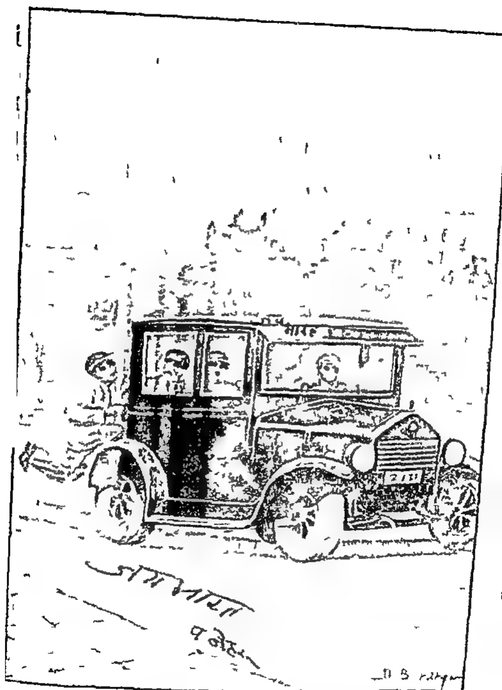
मि० ब्लेक—"नहीं। कैम्पियनसे मालूम हुआ है कि वह यहासे जानेके पहले वङ्कसे वहुत-सा रुपया निकाल ले गये हैं। इतनी जल्दी सबका सब थोड़े ही उड़ गया होगा?"

इतनेमें उनकी नजर एक वार पीछे फिरी तो उन्होंने देखा कि वह वूढा और काना भिखमङ्गा उनकी मोटरके पीछे-पीछे लटकता हुआ चला आ रहा है, पर वे ज्योंही उसे लपककर पकड़ना चाहते थे, त्योंही वह कूदकर साफ निकल भागा। मि० ब्लेकने देखा कि अब उसका पीछा करना वेकार है। उन्होंने कहा,—"हो सकता है, कि वह मेरे पीछे जान-बूझकर लगा हो और यह भी असम्भव नहीं है कि वह जासूसी करने आया हो, पर इतनी देरमें उसे क्या खाक मालूम हुआ होगा? जाने दो, गया सो गया।" टिङ्करने कहा—"पर उसे इतना तो ज़रूर हीं मालूम हो गया कि हमलोग कहा जा रहे हैं।"

इतनेमें ड्राइवरने पूछा,—"हा, जरा फिर तो वतलाइये, मैं गाडी कहा ले चलूं?"

मि० ब्लेकने कहा,—"डाकृर सर वाल्टर ग्रेवके घरपर ले चलो।"

थोड़ी ही देरमें मोटर हार्ली स्ट्रीटमें डाकृर ग्रेवके दरवाजेके सामनेमें आ खड़ी हुई। मि० ब्लेकने अपना कार्ड डाकृरके पास भेज दिया। थोड़ी ही देरमें डाकृर वाहर आये और वड़ी खातिरसे



वे मोटरमें चले। उनकी नजर एक बार पीछे फिरी तो उन्होंने देखा कि वह बूढा और काना भिखमङ्गा उनकी मोटरके पीछे लगे लटकता हुआ चला आ रहा है।

(पृ० ?

उन्हें अपने बैठकखानेमें ले आये। वहा पहुचनेपर मि० ब्लेकके प्रश्नके उत्तरमें डाकूरने कहा, कि मि० मिचेल एक महीना पहले मेरे पास आये थे। इसके बाद और-और बातें होनेपर डाकूरने कहा, "मेरी परीक्षासे तो यही साबित हुआ कि उनकी हालत खराब है। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उन्होंने रुपया कमानेकी धुनमें सोना भी हराम कर रखा था और दिन-रात काम करते रहते थे। इसी लिये मैंने उन्हें सारा काम-धन्धा छोडकर छ महीने बाहर सैर कर आनेकी सलाह दी। मेरी बात सुनकर उन्होंने कहा कि बाहर चले जानेपर भी मुझे अपने कार-बारकी देख भाल करनी होगी। लोग मेरे पास आते ही जाते रहेंगे। यह सुन मैंने कहा कि आप इतने दिनोंके लिये लापता हो जाइये और किसीको अपने रहनेकी जगह ठीक-ठीक मालूम न होने दीजिये। मैंने उनसे कहा है कि आप इस बीचमें अपने कारबारकी चिन्ता बिल्कुल छोड दें, किसीको चिट्ठीतक न लिखें, अखबार भी न पढ़ें और जहातक हो सके, मैदानमें टहलें, शिकार करें और सैर-सपाटा करते फिरें। साथ ही मैंने उन्हे एक तबियतदार रङ्गीन साथी साथ ले लेनेकी राय दी। इन्होंने अपने प्राइवेट सेक्रेटरीको साथ ले जानेकी इच्छा प्रकट की थी, पर मैंने इसे पसन्द नहीं किया। मैंने ऐसा साथी पास रखनेको कहा, जो उनकी थान फाटनेकी जरुरत रखता हो—उनका प्राइवेट सक्रेटरी तो ऐसा कभी नहीं करेगा।"

स्टेफने कहा—"आपने कैम्पियाको उनके साथ नहीं जाने

देकर अच्छा नहीं किया। उनका सिर एकदम फिर गया है और वे घरपर अण्ड-बण्ड चिट्ठियां लिखा करते हैं।" यह कह उन्होंने कैम्पियनसे जो कुछ मालूम किया था,वह डाकृरको बतला दिया।

डाकृर—"चाहे जो हो, पर मैं तो यह नहीं समझता कि वे इतनी जल्दी पागल हो गये होंगे। मैंने अपना जो आदमी उनके साथ लगा दिया है, वह उनके पागल होनेपर अबतक चुप न बैठा रहता, जरूर ही मुझे तार देता।"

ब्लेक—"आपका कौन आदमी उनके साथ गया है ?"

डाकृर—"आत्रे-डेयर। मैंने ही उनके साथ लगा दिया है। वह बड़ा खुशमिजाज है। उसने डाकृरीकी ऊंची परीक्षा पास की है और शिकार वगैरहमें बड़ा होशियार है। मिस्टर मिचेलकी कुल चिट्ठी-पत्री वही लिखता-पढ़ता होगा। मैंने उसको कह दिया है कि जो कोई अत्यन्त आवश्यक बात हो, वही मिस्टर मिचेलको बतलायी जाय। हालमें उसका एक पत्र मेरे पास आया है" यह कह उन्होंने एक चिट्ठी निकाल कर मि० ब्लेकको दिखलायी। मि० ब्लेकने देखा कि यह भी उसी मशीनकी छपी है। उन्होंने यह बात डाकृरसे भी कही। डाकृरने कहा—"मेरे उसी चेलेके पास कोरोना-मशीन है।"

ब्लेक—"क्या आपके पास आत्रे-डेयरका कोई फोटो है ?

"हां, है।" कहकर डाकृरने तुरत्ते घंटी बजायी। नौकरके आनेपर उन्होंने पूछा—"तुमने डेयरका फोटो कहां रख दिया है ?"

नौकर—"मैं तो उसे उसी दिनसे नहीं देखता, जिस दिन मौंजयर्गके प्रिन्स हेफ्र यहा आये थे।"

डाकृर—"अच्छा, तुम जाओ, मेरे पास दूसरा फोटो है। मि० ब्लेक! आप थोडी देर सब्र कीजिये, मैं ऊपरसे वह फोटो लाकर आपको देता हूं।"

यह कह डाकृर ऊपर चले गये। इधर मि० ब्लेक मेजपर टेलीफोनके पास पड़ी हुई एक पुस्तक देखने लगे।

डाक्टरके लौटनेके पहले ही उन्होंने पुस्तक देखकर ज्यों-की-त्यों रख दी और आप अपनी जगहपर पूर्ववत् बैठ रहे। थोडी देरमें डाकृर एक फोटो लिये हुए आये और उसे मि० ब्लेकके हाथमें देते हुए बोले—"लीजिये, यही उसका फोटो है।"

पाठकोंको याद होगा, कि ह्रिङ्कर भी मि० ब्लेकके साथ आया था। वह भी पास ही बैठा हुआ था। उसने भी धीरेसे उस फोटोको देख लिया। देखते ही वह अकचका गया। उसने देखा कि इसका चेहरा मिस जेक्सनसे मिलता-जुलता है। उसने तुरंत ही डाकृरसे पूछा—"क्षमा कीजियेगा, मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं। क्या आप किसी मिस जेक्सनको जानते हैं?"

डाकृरने सिर हिलाकर बतलाया कि नहीं। मि० ब्लेक अपने सहकारीकी इस बातपर बड़े आश्चर्यमें पड़े, क्योंकि उसने उनसे भी मिस जेक्सनकी बात नहीं कही थी। उन्होंने यहांपर उससे कुछ पूछना अच्छा नहीं समझा।

मि० ब्लेकने कहा—"अच्छा, यह तो कहिये, आप एडविन स्टेनफोर्थको जानते हैं ?"

यह सवाल सुनते ही न जाने क्यों डाक्टरके माथेमें बल पड गया। उसने कुछ सोचकर कहा—"नहीं, हा, हा, ठीक है। अभी याद आयी। उस दिन जब प्रिन्स हेक्टर मेरे यहा आये थे, उसी दिन इस नामका एक नवयुवक मेरे पास आया था। बस, इसके सिवा मैं उसके बारेमें और कुछ नहीं जानता। तबसे मैंने फिर उसे देखा भी नहीं।"

मि० ब्लेकने कहा—"कहीं वह भी बीमार होकर ही तो नहीं आया था।"

डाक्टरने कहा—"नहीं। इसीलिये तो मुझे आश्चर्य हुआ था कि वह क्यों मेरे पास आया ?"

ब्लेक—"अच्छा, उसका डील डौल कैसा था ?"

डाक्टर—"लम्बा, खूबसूरत और बडा ही शौकीन जवान था। उसकी पहिनाव-पोशाक खूब भडकीली थी—किसी बडे घरका मालूम पड़ता था।"

ब्लेक—"आपने भी खूब याद करके रखा है। अच्छा, तो अब मैं जाता हूं।" यह कह, वे टिङ्करके साथ बाहर चले। एक नौकर उन्हें बाहरतक पहुंचाने आया। ज्योंही वे दरवाजेके पास पहुचे, त्योंही एक आदमीने उस नौकरसे कहा कि मुझे डाक्टर साहबसे मुलाकात करनी है, उन्हें फुर्सत है या नहीं ? नौकरने कहा—"मैं अभी इन दोनों सज्जनोंको पहुंचाकर

लौटता हूं, तो आपके आनेकी खबर डाकृरसाहबको देता हूं।
तबतक आप बैठकखानेमें चलकर बैठिये।"

उस आदमीने कहा—"मुझे एक और जगह तुरत ही जाना है, इसलिये मैं ठहर नहीं सकता, फिर चला आऊँगा।" यह कह वह भी मि० ब्लेक और टिङ्करके पीछे-पीछे सदर सडकपर आ रहा था। इतनेमें एक किरायेकी मोटर जाती देखकर मि० ब्लेकने उसके ड्राइवरको पास बुलाया और आप गाड़ीमें सवार होकर टिङ्करसे कहा कि इस आदमीपर निगाह रखो और देखो कि यह कहा जाता या क्या करता है। टिङ्कर चुपचाप वहासे दूर खिसक गया। उधर मोटर रवाना हो जानेपर उस नये आदमीने सोचा कि मि० ब्लेक और टिङ्कर दोनों ही मोटरपर चढकर चले गये। यही सोचकर वह घूमता फिरता आक्सफोर्ड-स्ट्रीटमें चला आया। वहा एक होटल था। वह आदमी उसीमें घुस पडा। टिङ्कर भी उसके पीछे-पीछे चला।

उस आदमीका पीछा करता हुआ टिङ्कर दुमजिलेके एक सजे सजाये कमरेमें आ पहुचा। वहा उसने देखा कि वही आदमी एक जवान लडकीसे बैठा बातें कर रहा है। वह थोड़ी दूरपर था और उस लडकीकी पीठ उसकी ओर थी, इसीलिये न तो वह उस लड़कीका चेहरा देख सका और न इन दोनोंकी बातें ही सुन सका। थोड़ी देरमें वह आदमी उस लडकीसे बातें करके लौट चला। टिङ्करने फिर उसके पीछे पीछे जाना चाहा। इतनेमें वह लड़की उठी और उसने भी शायद उसी आदमीके

पीछे-पीछे जाना चाहा, पर तुरन्त ही न जाने क्या सोचकर फिर कुरसीपर बैठ रही। इसी समय टिङ्करने उस लड़कीका चेहरा देखकर पहचान लिया कि यह तो वही मिस जैक्सन हैं।

यह देखते ही उसने उस आदमीका पीछा करनेका इरादा छोड़ दिया और मिस जैक्सनके पास आकर सलाम करते हुए बोला—"कहिये मिस जैक्सन! आपकी तबीयत कैसी है?"

उस लड़कीने कहा,—"क्या आप मुझसे बातें कर रहे हैं?"

टिङ्कर,—"हां, आपहीसे। कहिये, आपने मुझे अबतक पहचाना या नहीं? आपने ही तो उस दिन रातको मुझे आश्रय दिया था, जब मैं कुहासेके मारे इधर-उधर भटकता फिरता था?"

बड़े आश्चर्यसे आंखें फाड़-फाड़कर टिङ्करकी ओर देखती हुई वह युवती बोली,—"आपकी बातें मेरी समझमें नहीं आतीं। मैंने आजतक कभी आपको नहीं देखा। मेरा नाम भी मिस जैक्सन नहीं है। आप गलती कर रहे हैं।"

यह बात उसने बड़ी दृढ़तासे कही। टिङ्कर थोड़ी देरके लिये झेंप गया। आस पासकी मेजोंपर जितने लोग बैठे थे, वे भी या विचित्र वार्त्तालाप सुनकर आश्चर्यसे इधर ही देखने लगे। प टिङ्करको इस बातका पूरा यकीन था कि उस दिन रातको यह लड़की उसे मिली थी और इस समय साफ झूठ बोल रही है यही सोचकर उसने कहा—"आपको याद होगा, उस दिन ज

मैं कुहासेमें भटकता फिरता था, तब आपने ही मुझे ब्राइन्स्टन स्कायरवाले मकानके अन्दर बुलाकर थोडी देर ठहराया था ।"

अबके वह युवती बडी झु झलाहटके साथ बोली,—"तुम भी अजीब आदमी मालूम होते हो। मैंने तुम्हें कभी नही देखा, मैं तुम्हे' नहीं जानती, और न जानना चाहती हूं। मेरा घर भी ब्राइन्स्टनस्क्वायरमें नहीं है। मैं काहेको तुम्हें अपने घरके अन्दर लाने गयी?" यह कह उसने टिङ्करकी ओरसे मुह फेर लिया, पर टिङ्कर भी सहज ही छोडनेवाला नही था। उसने फिर कहा—"पर जहातक मैं समझता हु, आप भूल रही हैं। अच्छा, यह तो कहिये, क्या आप आब्रे-डेयरको भी नहीं जानतीं?" यह कह, वह बडे गौरसे यह देखने लगा कि इस सवालसे उसके चेहरेपर कुछ चञ्चलता झलकती है या नहीं।

गुस्सेसे लाल लाल आखे किये हुई वह बोली,—"मैं क्या जानू कि वह कौन है, ? देखो, तुम भले आदमीकी तरह यहासे चले जाओ, नहीं तो मैं अभी मैनेजरको बुलवाती हू। तुम नाहक मुझसे छेड छाड कर रहे हो। वे आकर तुमको यहासे निकलवा दे'गे।"

टिङ्कर बडे घपलेमें पडा। उसे यही नहीं सूझ पडा कि इस समय क्या करना चाहिये। एक तो वह उस लडकीको छोडकर जाना नहीं चाहता था, दूसरे उसे इस बातका भी खयाल हो रहा था कि कहीं इसने मैनेजरको बुलाकर मुझे उसके साथ उलझा दिया, तो यह साफ निकल भागनेका मौका पा जायेगी।

वह चुपचाप खड़ा यही सोच रहा था कि इतनेमें किसीने पीछेसे बड़े जोरसे आवाज लगायी—"अबे, तू क्यों इस लड़कीके साथ छेड़छाड़ कर रहा है?"

टिङ्करने पीछे मुड़कर देखा कि एक अच्छे डीलडौल-वाला लम्बा-तगड़ा तीस-इकतीस सालका जवान उसके पीछे खड़ा यह बात कह रहा है। उसने कहा—"मैं इनके साथ छेड़-छाड़ नहीं करता। मैं इस धोखेमें था कि मैं इन्हें पहचान रहा हूं।"

यह सुन उस जवानने उसे धर्मोपदेश देना शुरू किया कि इस तरह किसी बेजान-पहचानवाली औरतसे छेड़खानी करना भले आदमियोंका काम नहीं है। इससे किसी दिन जूते खा जानेका पूरा भय रहता है। इन दोनोंको इस तरह बातोंमें फंसा देख मिस जौक्सन तो झट वहांसे रफू-चक्कर हो गयी। यह देख टिङ्करने सोचा कि मैं तो खासा उल्लू बना। वह आदमी भी निकल भागा और यह लड़की भी हाथसे चली गयी। अगर मि० ब्लेक यह बात सुनेंगे तो बड़े नाराज होंगे। पर अब क्या हो सकता है? अब तो—उड़ गयी सोनेकी चिड़िया, रह गये पर हाथमें।

वह यही सोच रहा था कि इसी समय उसका ध्यान उस मेजपर पड़ा, जिसके पास वह लड़की बैठी थी। उसने देखा कि मेजपर एक मुड़ा हुआ कागज पड़ा है, जो शायद जल्दीमें उसके थैलेसे गिर पड़ा होगा। टिङ्करने चटपट उस कागजको उठा

लिया, परन्तु उसने इस फुर्तीसे यह काम किया कि कोई इसे देख नहीं सका। खैर किसी तरह वहासे चलकर उसने एक कोनेमें जाकर यह पुर्जा खोलकर पढना शुरू किया। उसमें लिखा था,—

"प्यारी मोना! मैं मोरेटेनिया-जहाजपर सवार होकर अमेरिका जा रहा हू। शायद कई महीने मैं वहीं रहूगा। मैं कल तुम्हारे पुराने पतेपर तुमसे मिलने गया था, पर तुम नहीं मिलीं। मकानवालीने मुझे यह भी नही बतलाया कि तुम कहा हो या कब लौटोगी। बडा आश्चर्य है कि तुमने अबतक मुझे पत्र भी नहीं लिखा कि कहा हो, कैसी हो। बिना तुमसे मिले जाना बडा बुरा मालूम होता है। खैर, कहीं जाओ, पर अपनी मकान-मालिकिनको खबर देती जाओ कि तुम्हारी चिट्ठी-पत्री तुम्हारे पास भेज दिया करे। मैं न्यूयार्क पहुचते ही तुम्हें खबर दूंगा। यों तुमसे बिना भेंट किये जाना बडा ही बुरा मालूम होता है सही, पर तुम जानती ही हो कि इस समय मैं कैसी अवस्थामें पडा हू। आशा है, लौटकर आनेपर मैं तुम्हें सब प्रकारसे सुखी पाऊगा। मेरी फाउन्टेन कलममें स्याही नहीं है, इसीलिये यह चिट्ठी टाइपराइटरसे छापकर भेज रहा हू।

तुम्हारा—ए० डी०।"

यह चिट्ठी भी उसी टाइपराइटपर छापी गयी थी, जिसपर छापकर डाकृर और कैम्पियनके नाम चिट्ठी भेजी गयी थी। टिङ्करको यह समझते देर नहीं लगी कि ए० डी० मार्टेहेयरका

वह चुपचाप खड़ा यही सोच रहा था कि इतनेमें किसीने पीछेसे बड़े जोरसे आवाज लगायी—"अरे, तू क्यों इस लड़कीके साथ छेड़छाड़ कर रहा है?"

टिङ्करने पीछे मुड़कर देखा कि एक अच्छे डीलडौल-वाला लम्बा-तगड़ा तीस इकतीस सालका जवान उसके पीछे खड़ा यह बात कह रहा है। उसने कहा—"मैं इनके साथ छेड़-छाड़ नहीं करता। मैं इस धोखेमें था कि मैं इन्हें पहचान रहा हूं।"

यह सुन उस जवानने उसे धर्मोपदेश देना शुरू किया कि इस तरह किसी बेजान-पहचानवाली औरतसे छेड़खानी करना भले आदमियोंका काम नहीं है। इससे किसी दिन जूते खा जानेका पूरा भय रहता है। इन दोनोंको इस तरह बातोंमें फंसा देख मिस जौक्सन तो झट वहांसे रफू-चक्कर हो गयी। यह देख टिङ्करने सोचा कि मैं तो खासा उल्लू बना। वह आदमी भी निकल भागा और यह लड़की भी हाथसे चली गयी। अगर मि० ब्लेक यह बात सुनेंगे तो बड़े नाराज होंगे। पर अब क्या हो सकता है? अब तो—उड़ गयी सोनेकी चिड़िया, रह गये पर हाथमें।

वह यही सोच रहा था कि इसी समय उसका ध्यान उस मेजपर पड़ा, जिसके पास वह लड़की बैठी थी। उसने देखा कि मेजपर एक मुड़ा हुआ कागज पड़ा है, जो शायद जल्दीमें उसके थैलेसे गिर पड़ा होगा। टिङ्करने चटपट उस कागज़को उठा

लिया, परन्तु उसने इस फुर्तीसे यह काम किया कि कोई इसे देख नहीं सका। खैर किसी तरह वहांसे चलकर उसने एक कोनेमें जाकर वह पुर्जा खोलकर पढना शुरू किया। उसमें लिखा था,—

"प्यारी मोना! मैं मोरेटेनिया जहाजपर सवार होकर अमेरिका जा रहा हूं। शायद कई महीने मैं वहीं रहूंगा। मैं कल तुम्हारे पुराने पतेपर तुमसे मिलने गया था, पर तुम नहीं मिलीं। मकानवालीने मुझे यह भी नहीं बतलाया कि तुम कहां हो या कब लौटोगी। बडा आश्चर्य है कि तुमने अबतक मुझे पत्र भी नहीं लिखा कि कहां हो, कैसी हो। बिना तुमसे मिले जाना बडा बुरा मालूम होता है। खैर, कहीं जाओ, पर अपनी मकान-मालिकिनको खबर देती जाओ कि तुम्हारी चिट्ठी पत्री तुम्हारे पास भेज दिया करे। मैं न्यूयार्क पहुंचते ही तुम्हें खबर दूंगा। यों तुमसे बिना भेंट किये जाना बडा ही बुरा मालूम होता है सही, पर तुम जानती ही हो कि इस समय मैं कैसी अवस्थामें पडा हूं। आशा है, लौटकर आनेपर मैं तुम्हें सब प्रकारसे सुखी पाऊंगा। मेरी फाउन्टेन कलममें स्याही नहीं है, इसीलिये यह चिट्ठी टाइपराइटरसे छापकर भेज रहा हूं।

तुम्हारा—ए० डी०।"

यह चिट्ठी भी उसी टाइपराइटरपर छापी गयी थी, जिसपर छापकर डाकुर और कैम्पियनके नाम चिट्ठी भेजी गयी थी। टिङ्करको यह समझते देर नहीं लगी कि ए० डी० a ...यरका

ही संक्षिप्त नाम है। इसलिये चाहे मिस जैक्सन लाख इनकार करे, पर वह डेयरको जरूर जानती है। अब तो उसके मनमें तरह-तरहके प्रश्न उठने लगे। वह सोचने लगा—"इसने अपना घर क्यों छोड़ रखा है? जिस मकानमें उस दिन रातको यह मुझे ले गयी थी, उसमें यह किस लिये गयी थी? इसने मुझे क्यों आपसे आप भीतर बुलाया था? आव्रेडेयरसे इसका कौन-सा सरोकार है? अभी-अभी जो आदमी इससे बातें कर गया है, उससे इसका क्या सम्बन्ध है? जरूर उस दिन रातको यह किसीके धोखेमें ही मुझे बुला ले गयी थी। पर वह आदमी कौन है? क्या यह डेयरका ही इन्तजार कर रही थी या वह कोई और था? और क्या वही मेरे आनेके पीछे घंटी बजाकर वहां पहुचा था? फिर वह धड़ाकेकी आवाज कैसी थी? और उसके बाद मिस जैक्सनकी चिल्लाहटकी आवाज क्यों सुनाई दी थी।"

टिङ्कर इन प्रश्नोंका कोई उत्तर ढूढकर न निकाल सका। उसने सोचा कि अवश्य ही भाग्यने मुझे किसी रहस्यका भण्डाफोड़ करानेकी ही गरजसे मुझे उस दिन अकस्मात उस मकानमें पहुचा दिया था। पर वह भण्डाफोड़ कैसे हो? मोना जैक्सन ही शायद उसका असल नाम है और वह जितना जाहिर करती है, उससे कहीं अधिक जानती है। जरूर इसके साथ कोई गहरा भेद छिपा है। चाहे जो कुछ हो, यह आव्रेडेयरके साथ खूब घुली-मिली हुई है। हो सकता है कि इसीके सहारे हमलोग टी० मिचेलका भी पता लगा सकें।

तीसरा परिच्छेद

जासूस-सरदार भी छके

शामको मि० ब्लेक अपने घर पहुचे । उन्होंने अपना हैट नीचे कर रखा और माथेका पसीना पोंछते हुए कहा—"मैंने जहाजके आफिसमें जाकर दर्याफ्त किया, पर मिचेल या डेयरका कोई पता नहीं मिला । पासपोर्ट आफिसमें भी इन दोनोंके नाम पासपोर्ट जारी होनेका पता नहीं चला। बड़ा ताज्जुब है !"

यह सुन टिङ्करने उस आदमोके पीछे पीछे जानेपर मिस जैक्सनके फेरमें पड़कर दोनोंको हाथसे गँवा देनेका हाल कह सुनाया।

ब्लेक,—"तुमने डाक्टरसे भी मिस जैक्सनके बारेमें पूछा था, पर मुझे यह नहीं मालूम होता कि इस मामलेसे मिस जैक्-सनका क्या सम्बन्ध है।"

अबके टिङ्करने अपने उस रातवाले अनुभवका वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर ब्लेकने बड़े गुस्सेके साथ कहा,—"मूर्ख कहींका ! तूने पहले क्यों नहीं मुझसे इस बारेमें कुछ कहा ? यह तो बड़े मार्केकी बात है।"

टिङ्कर,—"सो कैसे ?"

ब्लेक,—"देखो, यद्यपि सैवेज और कैस्पियन दोनोंका कहना है कि मिचेलका सिर फिर गया है, तथापि मेरा ख्याल है

वह पागलपनका बहाना कर कोई गहरा मतलब पूरा करना चाहता है। डाकृर ग्रेव्स बड़ा होशियार आदमी है। उसने खूब सोच समझकर ही अपने प्यारे चेले डेयरको मिचेलके साथ कर दिया है। अभी जहांतक मेरा ख्याल है डेयर बेईमान आदमी नहीं है, साथ ही डेयर और इस लड़कीमें खूब दोस्ती है, इसमें भी कोई शक नहीं है, पर यह बड़ा आश्चर्य है कि वह अपनी चहेती मिले बिना ही दूरके सफरमें चला गया। मिचेल जैसे अर्थ-पिशाचका यों एकाएक देश छोड़ जाना गहरे मतलबसे खाली नहीं है। वह जरूर पहलेसे ही आनेका ठीक कर चुका होगा। डाकृरकी रिपोर्टसे उसे और भी सुभीता हो गया।"

टिङ्कर,—"पर वह अपने खास आदमियोंसे भी क्यों छिपा फिरता है?"

ब्लेक—"इसीका तो हमें पता लगाना है। मालूम होता है, कि उसपर कोई आफत आना चाहती है और उसीसे बचनेके लिये उसने यह फन्द रचा है। मालूम होता है कि बाजारके उलट-पुलटसे हो वह घबराया हुआ है। पर उस लड़कीके नामकी जो चिट्ठी तुझे मिली है, उससे मालूम होता है कि वह अमेरिकाकी ओर गया है। कल एक जहाज अमेरिका जा रहा है। चलो, हम भी उसीपर सवार होकर चल दें।"

टिङ्कर,—"जब मैं उस होटलसे बाहर हुआ, तब मैंने मिस जेक्सनको बहुत ढूंढ़ा, पर वह कहीं न मिली। तब मैं फिर डाकृरके पास पहुचा और अपने नामका जो कार्ड उस आदमीने

डाक्टरके नौकरको दिया था, उसे मांगकर देखा और साथ लेता आया हूं।"

यह कह, उसने एक कार्ड मि० ब्लेकके हाथमें दिया। उन्होंने उसमें उस आदमीका नाम और पता छपा देखा। उसमें लिखा था—"मारिस लेण्डर, न० १७६ थ्रेडनीडल स्ट्रीट ई० सी०।"

अबके मि० ब्लेकने कहा—"यह तो खूब पता चला। मैं आज तीसरे पहर फिर केम्पियनसे मिला था। उसीसे मुझे मालूम हुआ कि यह लेण्डर दलाल है। इसीने उस दिन कुछ बड़े और कैम्पडाग्सके तमाम शेयर बाजारमें बिकवाये थे। यह सुन टिङ्करकी आंखें फैल गयीं। वह मुंह बाये उनकी ओर देखने लगा। अबके उसने सोचा कि यदि मि० ब्लेकका कहना ठीक है तो मामला बड़ा बेढब है। मारिस लेण्डर और मिस जैक्सनसे जरूर कोई न-कोई सरोकार है। हां, यह हो सकता है कि इस लड़कीकी दोस्ती डेयरके ही साथ हो। इस तरह लेण्डर और डेयर दोनोंका सरोकार उस करोड़पति मिचेलसे भी है और इस नौजवान लड़कीसे भी।"

टिङ्कर,—"आपने यही सोचकर कि यह हमलोगोंका पीछा कर रहा है मुझे लेण्डरका पीछा करनेको कहा था?"

ब्लेक—"हां। देखो, पहले तो उस बने हुए मिखमङ्गेने हमलोगोंका पीछा किया, फिर यह हम दोनोंको ढूंढता हुआ डाक्टरके यहां आया, इसीसे ... सन्देह हुआ।"

टिङ्कर—"इससे तो ... कि यह लेण्डर

प्यास मालूम हुई, इसलिये वह उस जगह आया, जहां पीनेका पानी रखा हुआ था। वह पानी पीकर लौटना ही चाहता था कि उसने देखा कि कोई अन्धेरेमें चला आ रहा है। रात आधीसे अधिक बीत गयी थी, इसलिये उसे बड़ा अचम्भा हुआ कि इस समय कौन इधर चला आ रहा है। उसने पीछे फिरकर देखा कि एक स्त्री बड़ी धीमी चालसे चली आ रही है। वह उस तिपाईके पीछे छिप गया, जिसपर पानी रखा हुआ था। इसलिये जबतक वह एकदम ऊपर नहीं आयी तबतक उसको नहीं देख सकी। ज्योंही उसकी दृष्टि टिङ्करपर पड़ी, त्योंही उसके मुंहसे एक हलकी-सी चीख निकल पडी और वह बडी तेजीसे वहांसे खिसकनेकी चेष्टा करने लगी। टिङ्करने सोचा कि वह जरूर मुझे पहचान गयी है। इसीलिये इस तरह लपकी हुई भागी जा रही है। टिङ्कर पहचान गया कि यह और कोई नहीं, वही मोना जेक्सन है। उसने उसका पीछा किया, पर वह बड़ी तेजीसे पैर बढाती हुई घूमघुमौए रास्तेसे नीचे चली गयी। टिङ्करने सोचा कि अब कहां जाती है, अब तो यह मेरी मुट्ठीमें है। टिङ्कर भी उसका पीछा करता हुआ नीचे चला आया। धीरेसे उसके पास पहुंचकर उसके कन्धेपर हाथ रखकर टिङ्करने कहा—"अब बोलो, मैंने तुम्हें पकड़ पाया या नहीं?"

उसने अपनेको सम्हालकर कहा,—"बस, चुप रहो। खबरदार, हट जाओ!" इतनेमें एकाएक न जाने किसने टिङ्करके पीछे आकर उसे धड़ामसे जमीनपर दे मारा और उसके मुहमें कपडा

टूसकर उसको कस कसकर बांध दिया। वह थोड़ी देरके लिये बेहोश हो गया। जब वह होशमें आया, तब उसने देखा कि वह एक तकियेके सहारे लेटा हुआ है और बहुतसे मुसाफिर उसे चारों ओरसे घेरकर खड़े हैं। मोना जेक्सनका कहीं पता नहीं है। लोगोंने उससे कितने सवाल किये,पर उसने किसीको ठीक-ठीक जवाब नहीं दिया, योंही उलटा-सीधा जवाब देकर झट मि० ब्लेकके पास पहुंचा। मि० ब्लेक उसके साथ वहां आये, जहां यह घटना हुई थी। उस समय वहां और कोई नहीं था। सब अपनी-अपनी केबिनोंमें चले गये थे। मि० ब्लेकने टिङ्करसे पूछा—"वह क्या इसी रास्तेसे गयी थी?" टिङ्करके हामी भरनेपर वे झट उसी रास्तेसे चारों ओर नजर दौड़ाते हुए जाने लगे। जाते जाते उन्हें रास्तेमें कोई चीज पड़ी मिली। वह एक कागजका टुकड़ा था, जो शायद किसी बड़े कागजसे फाड़ा गया था। अच्छी तरह परीक्षा करनेपर उन्हें मालूम हुआ कि यह कागज स्याहीसोख है। उसे उलट पुलटकर देखते हुए मि० ब्लेकने कहा—"ऐसा स्याहीसोख जहाजपर कहांसे आया?"

टिङ्कर—"मुझे जहांतक याद आती है, मैंने इस तरहका स्याही सोख उस दिन कुहासेवाली रातको मिस जेक्सनकी मेज-पर भी पड़ा देखा था।"

यह सुन मि० ब्लेकने स्याही-सोखका वह टुकड़ा अपनी जेबमें रख लिया। इसके बाद वे टिङ्करके साथ-साथ चारों ओर घूम आये, पर उन्हें कहीं वह लड़की नहीं दिखाई दी। इतनेमें

एक नौकरको पास आया देख मि० ब्लेकने पूछा—"इन केबिनमें कौन-कौन हैं ?"

नौकरने कहा—"कोई नहीं है। एक आदमीने इन्हें भाड़ेपर लिया था, पर पीछे उसने लेना अस्वीकार कर दिया।"

मि० ब्लेकने कहा—"अच्छा, एक बार मुझे दिखला दो। मैं इन केबिनोंका मुलाहजा करना चाहता हूं।"

नौकरने दरवाजा खोलकर दिखा दिया, पर कहीं कोई नहीं दिखाई दिया। वहां एक जगह एक आदमीके अंगूठेका निशान दीवालपर पड़ा हुआ दिखाई दिया, पर वह कोई कामकी बात नहीं थी।

इसके बाद वे जहाजके कप्तानके पास चले गये। वहां उनसे जो बातें हुईं, उन्हींका यह परिणाम हुआ कि जहाजके ऊपर जो और और जासूस मौजूद थे, वे सब मि० ब्लेककी सहायता करनेके लिये तैयार हो गये। पर बड़े ताज्जुबकी बात यह थी कि उस जहाजपर मिस जेक्सनका कहीं पता नहीं था। कुछ लोग टिङ्करके दिमागमें फतूर हुआ समझ रहे थे, पर जिस जगह वह तकियेपर बेहोशीकी हालतमें पड़ा हुआ था, वहां अब भी वह मौजूद था। नौकरोंको यह दर्याफ्त करनेके लिये भेजा गया कि वे जाकर यह देखें कि किस केबिनसे यह तकिया उड़ाया गया है ; पर इसका भी कोई नतीजा नहीं निकला। किसी केबिनसे तकिया गायब नहीं हुआ था। अन्तमें उस तकियेकी भलीभांति परीक्षा करके मि० ब्लेकने कहा,—"देखो, इस तकियेपर इसी

जहाजी कम्पनीका नाम छपा हुआ है। इसलिये इसकी मालिकिन यही कम्पनी है, इसमें तो कोई सन्देह नहीं है।"

कप्तानको यह बात स्वीकार करनी पड़ी कि यह तकिया इसी कम्पनीका है। इसके बाद उसने कहा कि आप जो कुछ सहायता हमलोगोंसे लेना चाहें, ले सकते हैं, हमलोग आपको सहायताको तैयार हैं। इसके बाद मि० ब्लेकने कहा—"अच्छा,वे जो खाली कमरे पड़े हैं, उन्हें मैं एक बार और देखना चाहता हूं। मेरे खयालसे वहां सोनेके लिये बिछौना बिछाया हुआ है।"

इसके बाद वे जहाजवालोंके साथ उन खाली केबिनोंमें गये। आखिरी केबिनमें पहुंचकर उन्होंने बिछौनेकी तरफ देखते ही कहा—"यह देखो, इसी केबिनका तकिया गायब है। कोई यहींसे उसे उड़ा ले गया है, इसमें शक नहीं है।"

यह केबिन उस जगहके पास ही पड़ती थी,जहां टिङ्कर बेहोश पड़ा था। इसलिये मि० ब्लेककी यह युक्ति सबके गलेके नीचे उतर गयी। कप्तानने कहा—"पर इससे इस बातका पता तो नहीं लगता कि आपके सहकारीको किसने बेहोश करके गिरा दिया था। यह भी बड़े अचम्भेकी बात है कि वह लड़की रातको इसी जहाजपर नजर आयी और फिर गायब हो गयी। कहीं आपके सहकारीको रातके समय सोते सोते उठकर घूमनेकी आदत तो नहीं है? कहीं इन्होंने सपना तो नहीं देखा?"

मि० ब्लेक—"नहीं, मेरा सहकारी बड़ा ही होशियार है। उसे न तो कोई बीमारी है और न उसने सपना ही देखा है।"

कप्तानने कहा—"ख़ैर, मि० ब्लेक! मैं आपको इस बातका पूरा विश्वास दिलाता हूं कि वह लड़की इस जहाजपर नहीं है। पहले तो मुझे शङ्का हुई थी कि कहीं किसीने उसे अपनी केबिनमें छिपाकर तो नहीं रखा है, पर नहीं, मैंने हर जगह अच्छी तरह खोज-ढूंढ़ करके देख लिया है। हां, अगर वह वेश बदले हुई हो तो और बात है। साथ ही मैंने यह भी दरयाफ्त किया है कि उस समय रातकी ड्यूटीपर कौन कौन आदमी थे। उन सबकी नजर बचाकर कैसे वह ज्यादा दूरतक घूमी-फिरी होगी, यह भी एक सोचनेकी बात है। वह यहांसे सेकेन्डक्लास या कल पुर्जोंके पासतक जा सकी हो, ऐसा तो हो नहीं सकता।"

ख़ैर, उस दिन सारा दिन ब्लेक और उनका सहकारी दोनों पहली श्रेणीके मुसाफिरोंपर नजर रखा किये, पर कहीं कोई ऐसा आदमी नहीं दिखाई पड़ा, जिसपर वेश बदले हुई मोना जैक्सनका भ्रम किया जा सके। अचता-पछताकर टिङ्करने कहा, "आखिरकार वह गयी कहां? यह तो बड़े अचम्भेकी बात है!"

ब्लेकने कहा—"अच्छा सुनो, आज रातकोहमलोग केबिन बदल दें और अपना सारा सामान यहीं छोड़कर सोनेके लिये उसी केबिनमें चले जाय, जहांसे तकिया गायब किया गया है।"

आधी रातको मि० ब्लेक अपने सहकारीके साथ उसी केबिनमें चले गये और दरवाजा बन्द कर कान खड़े किये रहे।

घन्टों बीत जानेपर भी कहीं कुछ दिखाई या सुनाई नहीं पडा। कभी कोई नौकर या पहरेदार उधरसे जाता मालूम पडता, तो वे झांक कर देखने लगते, पर अन्तमें निराश होकर बैठ रहते थे।

भोर होते-होते टिङ्करने निराश भरे स्वरसे कहा—"यह तो पूरी बेगार ही हुई।" ऊंघते हुए ब्लेकने कहा—"चलो, जाने दो, अब थोडी देर सो लिया जाय।" यह कह वे सो गये। टिङ्कर भी पड रहा। दो दिनकी जगारसे उसे जल्द गहरी नींदने धर दबाया। दिन चढ आनेपर भी दोनोंमेंसे किसीकी नींद न टूटी। घन्टाभर दिन चढ आनेके बाद बहुतसे आदमियोंके एक साथ शोर गुल करनेके कारण मि० ब्लेककी नींद टूट गयी, और वे घबराये हुए अपनी केबिनकी ओर चले। वहां बहुतसे आदमी जमा थे।

केबिनके पास पहुचकर उन्होंने देखा कि दो आदमी जहाजके एक नौकरको, जो बिलकुल बेहोश हो रहा है, घेरे बैठे हैं। उनकी केबिनका द्वार खुला है, जिसके भीतर एक और नौकर हाथसे मुह बन्द किये झांक रहा है। झांकते ही-झांकते उस आदमीको बडे जोरसे खांसी आने लगी। वह खांसता हुआ पीछे लौट आया। इसी समय मि० ब्लेक वहां आ पहुचे। उनकी नाकमें भी एक तरहकी कडी गन्ध पहुची।

ब्लेकने आते ही पूछा—"क्यों भाई! क्या मामला है?"

उनमेंसे एकने कहा—"और तो मैं कुछ नहीं जानता, सिर्फ

धीरे धीरे जहाज न्यूयार्कके पास आ पहुंचा। कप्तानने कहा—"मि० ब्लेक! देखिये, जहाज बन्दरगाहपर पहुंचते समय हमलोगोंको बड़ी कड़ी नजर रखनी पड़ेगी। अगर सच-मुच वह लड़की इसी जहाजपर है, तो वह हम सबकी निगाह बचाकर नहीं उतर सकती। यदि किसी तरह हमें धोखा देकर निकल भी जाये, तो चुंगी और पासपोर्टवालोंकी निगाहसे नहीं बच सकती। उसपर पूरी निगाह रखनेकी जरूरत है। देखें कैसे भागती है।"

ब्लेकने सोचा कि ठीक है। अमेरिकन सरकार लुक-छिप कर नशेकी चीजें ले जानेवालों और परदेशियोंको तलाशी लेनेमें बड़ी सावधानी रखती है। अगर मोना जैक्सन संयुक्त राज्यकी पुलिसकी निगाह बचाकर निकल भागी तो उसकी बुद्धिकी प्रशंसा करनी ही पड़ेगी।

दूसरे दिन सारा दिन कुहासा पड़ता रहा, इसलिये जहाज धीरे-धीरे चलने लगा। शामको सेण्डी हुक-बन्दरमें पहुंचनेकी बात थी, पर उसकी आशा जाती रही। ब्लेक और टिङ्कर चुपचाप बिछौनेपर पड़ रहे। थोड़ी देर बाद एक धीमी आवाज सुनाई दी। ब्लेक कोहनीपर भार देकर उठ बैठे और उन्होंने अपने तकियेके नीचेसे बिजलीकी बत्ती निकालकर अपने हाथमें रख ली। उन्हें साफ मालूम पड़ा, मानों कोई हलके पांवों इधर आ रहा है। ब्लेकने धीरेसे केबिनका दरवाजा खोलकर बत्ती जलायी। उसकी रोशनीमें किसीकी पोशाक और पैर दिखाई

पड़े। वे बत्ती बुझाकर उस आदमीको पकड़नेके लिये उठे, पर वह उनके पहुंचनेके पहले ही चल दिया। खैर, वे आगे बढ़ते चले गये। उन्होंने देखा कि एक जगह दीवारमें दरवाजासा बना है। वे उसीकी राह भीतर घुसे। वह भी एक छोटी मोटी केबिन ही थी। उसमें किसी स्त्रीकी पोशाक आदि चीजें रखी थी। दीवालोंपर जर्मनीके कैसर और युवराजकी तस्वीरें टंगी थीं। इसी समय उन्हें सिरके ऊपर किसीकी चीख सुन पड़ी। उन्होंने बत्ती ऊपरकी ओर करके देखा कि छतमे एक बड़ासा रोशनदान बना है। यह देखते ही वे चिल्ला उठे—"अब समझा! तुम इसी राहसे ऊपर गयी हो।" ब्लेकने ट्रंकपर पैर रखकर ऊपर चढ़नेकी कोशिश की, पर उनका मोटा ताजा बदन उस रोशनदानके मोखेके भीतर न समा सका। उन्होंने जोरसे पुकार कर कहा—"टिङ्कर! देखना, कोई हमारी केबिनके भीतरसे होकर न जाने पाये।" यह कह वे ठीक अपनी केबिनके ऊपर डेकपर चले आये। इसी समय उन्हें एक छाया मूर्त्ति नीचे उतरती दिखाई दी। ब्लेकने बड़े जोरसे चिल्लाकर कहा—"ठहर जाओ, नहीं तो मैं गोली मार दूंगा।" पर उस छाया-मूर्त्तिने उनकी बातोंका कुछ भी खयाल न किया—"वह आगे ही बढ़ती चली गयी। थोड़ी देरमें वह उनकी आखोंकी ओट हो गयी। उन्होंने देखा कि अब उसको पाना असम्भव है। वे इधर उधर बहुत खोजते फिरे, पर वह मूर्त्ति उन्हें फिर नहीं दिखाई दी। वे निराश होकर लौट रहे थे, इसी समय कोई चीज उनके पैरोंतले पड़ी

उन्होंने उठाकर देखा कि यह तो किसी स्त्रीका लबादा है। वे अब समझ गये कि मोना जेक्सन उन्हें भी छका गयी। वे सोचने लगे—"यह विचित्र लडकी कौन है? यह क्यों न्यूयार्क जा रही है? मालूम होता है, कि यह समुद्रमें कूद पडी है, पर कैसे पार उतरेगी? क्या इसे अपनी जानका भी डर नहीं है?"

चौथा परिच्छेद



चुर फसे

ब्लेकने जो उस छाया-मूर्त्तिको देखकर गोली मारनेकी धमकी दी थी, उसकी आवाज सुनकर एक नौकर उनके पास चला आया और पूछने लगा कि मामला क्या है? ब्लेकने उसे वह लबादा दिखा दिया। उसने देखते ही कहा—"यह तो किसी औरतका लबादा मालूम पडता है।"

ब्लेक अपनी केबिनमें चले आये। उनको इस बातका पूरा विश्वास था कि मोना जेक्सन पानीमें ही उतर पडी है, क्योंकि और किसी तरफ जानेका रास्ता नहीं था। इसके बाद मि० ब्लेकने जब सबको दीवारके अन्दर छिपी हुई केबिन दिखायी, तब सबलोग आश्चर्य करने लगे। यह जहाज जर्मनोंका था। अंगरेजों-

ने उसे लड़ाईमें कैद कर लिया था। तबसे यह जहाज कितनी दफे समुद्रकी सैर कर चुका, पर आजतक किसीको इस छिपी हुई केबिनका पता नहीं लगा। ब्लेकने उस केबिनके अन्दर जाकर अच्छी तरह देखभाल करनी शुरू की। उन्होंने देखा कि कपड़ोंके सिवा वहां एक पानीकी बोतल भी रखी है, जिसपर युवराज ल्यूडेनडर्फकी तस्वीर चिपकी है। पास ही कुछ खानेका भी सामान रखा है। उन्होंने सोचा,—"वह जरूर जहाज रवाना होनेके थोड़े ही पहले जाकर सवार हुई होगी। उस समय बहुत-से लोग अपने हित-मित्रों और रिश्तेदारोंको पहुंचाने आते हैं। एक लड़कीको हाथमें छोटासा बेग लिये किसीने आते नहीं देखा, तो आश्चर्य ही क्या है? उसे इस छिपी हुई जगहकी बात मालूम थी और इसीलिये वह आसानीसे यहा आकर छिप गयी। देखो तो सही, वह कितना खाने पीनेका सामान साथ लिये आयी थी। पानीका यह बर्त्तन फूटा निकला और सारा पानी चू गया, इसीलिये वह पानीकी तलाशमें बाहर निकली थी, नहीं तो अन्ततक इसीमें छिपी रहती।"

टिङ्करने कहा—"उस दिन रातको वह पानी ही लेने आयी थी, जब मैंने उसके काममें विघ्न डाला था।"

ब्लेक—"मैं देखता था कि मेरा पानी बराबर कम होता जाता है, इसीलिये मैंने उस दिन तमाम पानी नीचे डाल दिया था। आखिरकार मेरा सोचना ठीक निकला। उसे मजबूर होकर, पानी लेनेके लिये बाहर आना पड़ा, नहीं तो सारा सफर

छिपे-ही-छिपे तै कर डालती। मालूम होता है, इस केविनमें जर्मनीके जासूस छिपे तौरसे सफर करते रहे होंगे।"

"आपका कहना बहुत ठीक है।" यह कहता हुआ 'शोल्टो-बार' झट वहां आ पहुंचा। उसने भी उस छिपी हुई केबिनको अच्छी तरह देखना शुरू किया। देखकर उसने कहा—"अच्छा, तो वह छोकरी इसीमें छिपी बैठी थी? उसने तो हम सबकी आंखोंमें खूब धूल झोंकी!"

ब्लेकने मानों अकचका कर पूछा—"किसने?" बात यह थी कि अबतक जहाजके अफसरों, कुछ नौकरों और उनके सिवा अन्य मुसाफिरोंको मोना जैक्सनका हाल नहीं मालूम था। फिर इसने कैसे जाना?

बारने कहा—"मैं क्या जानूं, वह कौन थी? मैंने अभी कुछ नौकरोंको बातें करते सुना कि कोई औरत छिपी हुई थी, वही निकल भागी है। इसीसे मुझे आश्चर्य हुआ।"

ब्लेकने बड़ी तीखी निगाहसे उसकी ओर देखा, पर उन्हें किसी तरहका सन्देह नहीं मालूम पड़ा। उन्होंने सोचा कि इसकी केबिन पास ही है, इसलिये इसने जरूर नौकरोंके मुंहसे यह बात सुनी होगी। थोड़ी देर बाद बार अपनी केबिनमें चला गया। ब्लेक उसकी बात भूलकर और-और बातें सोचने लगे। सबसे पहले उन्हें उस चिट्ठीकी बात याद आयी, जो आब्रेमें उस लड़कीके नाम लिखी थी। उन्होंने सोचा—"चाहे विवाहकी बात पक्की नहीं हुई हो, पर इस लड़कीका आब्रेपर प्रेम अवश्य

है। पर इसे अमेरिकाका सफर करनेकी क्या पड़ी थी ? वह क्या अब लौटेगा ही नहीं ? फिर इस तरह छिपे-छिपे सफर करनेका क्या काम था ? हो सकता है, उसके पास पासपोर्ट नहीं हो। परन्तु जब डेयर यहां थोड़े ही दिनोंके लिये आया है, तब यह भी सैरके लिये पासपोर्ट ले सकती थी। तो क्या इसके पास जहाजका भाड़ा नहीं था ? अगर यह मिचेलके आदमियोंके इशारेपर काम कर रही है, तो फिर रुपयेकी क्या कमी होगी ? इसका अवश्य ही कोई और कारण होगा। हो सकता है, कि यह मुझीसे अपनेको छिपानेके लिये इस प्रकार गुप्तरूपमें यात्रा कर रही हो। पर नहीं, यह बात भो नहीं हो सकती, क्योंकि जब टिङ्कर उसे पहचानता ही है, तब उसे न भेजकर उसके मालिक दूसरे किसीको भेज सकते थे। इसलिये वह जरूर किसी और ही आदमीसे अपनेको छिपाना चाहती है।" येही सब बातें सोचते हुए वे ऊपर डेकपर आकर देखने लगे कि मोना जेमसनको ढूंढनेके लिये जो दो बोट रवाना हो चुके हैं, वे लौटकर आये या नहीं। थोड़ी ही देरमें दोनों बोट लौट आये। उस लड़कीका कहीं पता न लगा।

दूसरे दिन सवेरे ही जहाज न्यूयार्क पहुंच गया। ब्लेकने यहां भी उसी लड़कीको बहुतेरा ढूंढा, पर वह नहीं मिली। उन्होंने उसका जो सब सामान उस गुप्त केबिनमें पाया था, उसे जहाजवालोंको ही दे दिया, क्योंकि उन सब चीजोंके सहारे किसी बातका पता लगानेकी कोई सम्भावना नहीं थी। इसके

याद वे सेन्ट-रेजिसहोटलमें चले गये। वहां कपड़े उतारकर वे झट नाश्ता करने बैठ गये; क्योंकि बड़ी देरसे भूख लगी हुई थी। उन्होंने उस दिनका नया अखबार मंगवाकर देखा। उसमें यह समाचार छपा था.—

"दो-दो डूब गये !"

"कल रातको दो पुरुष और एक युवती बालिका स्टेटन टापूके पास बोटमें पानी भर आनेसे पानीमें गिर पड़े। लड़की नहानेके समयका कपड़ा पहने हुई थी। इसलिये मालूम होता है कि वे लोग समुद्रमें नहानेके ही इरादेसे आये थे। लड़की किसी तरह तैरती हुई बाहर आई, पर वह बहुत परेशान मालूम होती थी। उसके मुंहसे बोल भी नहीं निकलता था। बड़ी मुश्किलसे उसने अपना नाम एनिड-पेटिनजर बतलाया। कुछ देर बाद दो आदमियोंकी लाशें समुद्रमें मिलीं। उनके पास जो कार्ड मिले हैं, उनसे उनके नाम क्रमशः एडविन-मूर और गस्टव बेरिन मालूम पड़ते हैं। अभीतक यह नहीं मालूम हुआ कि ये लोग कौन थे और कहांसे आ रहे थे। यह दुर्घटना 'आरोचर' नामक स्थानके पास हुई है।"

यह खबर पढ़ते ही मि० ब्लेक झटपट नाश्ता खतम कर टिङ्करको साथ ले आरोचर पहुंचे। यह स्थान न्यूयार्ककी ऊपरी खाड़ीके पास है। रातको उनका जहाज इसी जगह आकर अंधेरेके कारण टिका हुआ था। आरोचर एक छोटी-सी बस्ती है। इधर-उधर कुछ दूकानें भी हैं। वहींके एक दूकानदारके

पास पहुचकर मि० ब्लेकने इस घटनाका जिक्र छेड दिया। उसने कहा—"कल बडी रात गये मिस पेटिनजरने मेरा दरवाजा खटखटाया। मैंने किवाड खोलकर देखा कि वह एकदम पानीसे तर हो रही है। उसने अपने साथियोंके बारेमें तो कुछ नहीं कहा—सिर्फ अपने विषयमें इतना कहा कि मैं नाव उलट जानेसे समुद्रमें गिर गयी थी किसी तरह तैरती हुई निकल आयी हू। लडकी बडी सुन्दर थी। बात-चीतसे इंग्लैण्डकी रहनेवाली मालूम पडती थी।"

मि० ब्लेक—"अब वह कहा गयी?"

दुकानदार—"आप यह सब किस लिये पूछ रहे हैं? क्या आप किसी अखबारके सवाददाता हैं?"

मि० ब्लेक—"नहीं। मेरी एक रिश्तेकी लडकी कल रातको बोटका सफर करने निकली थी। वह इस समयतक घर नहीं लौटी है, इसीलिये मुझे शङ्का होती है कि कहीं वही तो इस दुर्घटनाका शिकार नहीं हुई?"

दूकानदार—"मुझसे उसने जबान बन्द रखनेका अनुरोध किया है। वह अखबारोंमें अपना नाम छपवाना नहीं चाहती। वह चाहती है कि किसी तरह झटपट अपनी माके पास पहुच जाये, विशेष हल्लागुल्ला न होने पाये। पर चूकि आप कहते हैं कि उसके साथ आपकी नातेदारी है, इसलिये मैं आपसे कहे देता हूं कि वह मेरी स्त्रीसे कुछ कपडे ले गयी है और जमानतके तौरपर अपनी अंगूठी रख गयी है। जाते समय कह गयी है कि जब मैं

तुम्हारे कपडे भिजवा दूगी, तब तुम भी मेरी यह अगूठी फेर देना। आज सुबह ही तो गयी है।"

इसके बाद ब्लेकने वह अगूठी मंगवाकर देखी। उस सोनेकी अगूठीमें हीरा जडा हुआ था, जिसका दाम बहुत मालूम पडता था। उस अगूठोके भीतर १८ की संख्या खुदी थी। उसे अच्छी तरह देख-भालकर ब्लेकने टिङ्करसे कहा—"देखो, इसमें इंग्लेण्डके अठारह करातवाले सोनेका निशान पडा है। यह दूकानदार कहता ही है कि वह इङ्गलेण्डकी औरतोंकी तरह बोलती थी। इससे साफ-साफ मालूम होता है कि वह बीस बिस्वे इङ्गलैण्डकी ही रहनेवाली है।

इसके बाद वह दुकानदार मि० ब्लेकको हैयम नामके उस मोटरवालेके पास ले गया, जो एनिड पेटिनजरको टापूके उस पार पहुचा आया था। उसने पूछनेपर कहा कि मैंने उसे जेरसी तक पहुचा दिया, पर मैं यह नहीं जानता कि वह वहासे फिर कहा चली गयी।

मि० ब्लेकने कहा—"उसने तुम्हें भाडा दिया या नहीं?"

मोटरवाला—"पहले ही चुका दिया था।"

मि० ब्लेक—(दूकानदारसे) "क्यों भाई! तुम तो कहते थे कि वह नहानेके समयका कपडा पहने थी, फिर उसके पास मोटरका भाडा चुकाने लायक दाम कहासे आया? कहीं कोई पासमें रुपये-पैसे लेकर भी नहाने जाता है?"

दूकानदार—"हा, बात तो आपने बडे पतेकी कही। यह कुछ अचरज सा जरूर मालूम पडता है।"

मोटरवाला—"अजी जनाब! उसके पास इतना रुपया था कि वह दो दफे यहासे शिकागो जाती और लौटती।"

इस खबरके लिये दोनों आदमियोंको धन्यवाद देनेके बाद मि० ब्लेकने टिङ्करको एक ओर ले जाकर कहा—"अब तो इसमें कोई शक नहीं कि मोना-जेक्सन ही एनिड-पेटिनजर बनी हुई है। उसके भाग्य प्रबल थे, जो बोट उलट जानेपर भी जीती बच गयी। उसने किनारे लगकर जैसा मौका देखा वैसी बातें बनाकर लोगोंकी आखोंमें धूल झोंक दी। छोकरी बड़ी होशि-यार है।"

टिङ्कर—"पर उसको इतना रुपया कहासे मिला?"

ब्लेक—"जहाजपर सवार होते समय जो कुछ उसके पास था, वह सब लेती आयी होगी। उसने यह सब बन्दिशें पहलेसे ही बाध रखी होंगी। इगलेण्डसे चलनेके समय ही उसने रुपया भुना लिया होगा और मौके बेमौकेके लिये नहानेकी पोशाक पास रख ली होगी। पर हा, एक बातमें वह भूल गयी। वह जिस समय दूकानवालेके पास पहुची थी उस समय उसके पैरोंमें मोजे नहीं थे—मैंने भी जहाजपर उसके पैरोंमें मोजे नहीं देखे थे, इससे दो बातें मालूम होती हैं। पहली तो यह कि मोना जेक्सन और एनिड पेटिनजर एकही व्यक्ति है और दूसरी यह कि वह पहले कभी अमेरिका नहीं आयी थी, नहीं तो ऐसी भूल कभी न करता। अमेरिकावाले नहानेके समय मोजे चढाये रहते हैं।"

इसी तरह बातें करते हुए वे दोनों गावकी तरफ मुडे। इसी समय उन्हें एक मोटरका भोंपू सुनाई दिया। वे झट एक जगह जाकर छिप रहे और देखने लगे कि उसपरसे कौन उतरता है। वह मोटर सीधी उसी दूकानदारकी दूकानके सामने आ खड़ी हुई। मि० ब्लेकने देखा कि उसपरसे 'शोल्टोवार' नीचे उतरा और दूकानदारसे पूछ रहा है—"क्यों भाई! वह लड़की जो कल रातको नाव उलट जानेसे डूबते-डूबते बची है, कहीं आसपास दिखाई दी है ?"

दूकानदारने कहा—"क्यों, क्या आप भी उसके नातेदारोंमेंसे हैं ? अभी तो दो जने मेरा सिर चाट गये हैं।"

यह सुनते ही मि० ब्लेकने वहां ठहरना ठीक नहीं समझा और झट टिङ्करके साथ अपनी मोटरपर जा सवार हुए। रास्तेमें जाते-जाते उन्होंने कहा—"देखो, यह शोल्टोवार उसी मोना जेक्सनके फिराकमें घूम रहा है। मेरा तो ख्याल है कि उस दिन रातको जब तुमने मोनाको टोका था, तब इसीने पीछेसे तुमपर हमला किया होगा।"

टिङ्कर—"पर यह क्यों उस लडकीके पीछे-पीछे डोल रहा है ? अगर यह भी उससे मिला होता, तो जरूर इसे इस बातका पता होगा कि वह लडकी कहा जायेगी और कहा ठहरेगी।"

ब्लेक—"पर मेरे खयालसे यह उससे मिला हुआ नहीं है। अगर मिला होता तो इस बातपर अचम्भा ही क्यों करता कि वह जहाजकी गुप्त केबिनमें छिपी थी ?"

टिङ्कर—"पर इसीने उस दिन होटलमें मुझे मिस जैक्सनसे बातें करनेसे रोका था। मैं तो समझता हूं कि दोनों मिले हुए हैं।"

ब्लेक—"नहीं, बल्कि हो सकता है कि यह भी उसका कोई दुश्मन ही हो और उसका पीछा कर रहा हो। खैर, चलो हमलोग फार्टरेट स्टेशनतक चलकर देखें कि वह कहां गयी है। वह भी जरूर उसी स्टेशनतक जायेगी।"

तुरत ही दोनों स्टेशन जानेके लिये तैयार हो गये। टिङ्करने रास्तेमें जाते जाते कहा—"पर देखिये, अगर ये दोनों नहीं मिले हुए थे, तो मैंने जब उसको जहाजपर छेडा था, तब भी वह क्यों बीचमें कूद पडा था ?"

ब्लेक—"क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि तुम उस बेचारीकी गरदन नापो। मेरा यह पक्का खियाल है कि यह 'थार' भी मिचेलकी ही तलाशमें घूम रहा है। वह हमलोगोंका इरादा समझ गया है। इसीलिये वह यह नहीं चाहता कि मिचेलका पता लगानेमें हमलोग इस लडकीसे काम निकाल लें। वह खुद इसको अपनी मुट्ठीमें किया चाहता है।"

यह बात टिङ्करके नहीं जंची। वह और भी चक्करमें पड़ गया। वह सोचने लगा—"यह आदमी कौन है ? क्या यह मिचेलका कोई दुश्मन है ? पर चाहे जो कोई हो, आदमी है बड़ा ही काइयां और चलता-पुर्जा। इसीने हमारी केबिनमें जहरीला धुआं फेंका होगा। जो आदमी इस तरह अपना काम बनानेके लिये

किवाड खुल गये। वे भीतर घुसे। इसी तरह वे एक-के-बाद दूसरा कमरा पार करते चले गये, पर कहीं रोशनी या आदमीकी सूरत नहीं दिखाई पडी। इसी समय उन्हें पीछेसे किसी प्रकारका खटका सुनाई दिया। वे झट पीछे लौटे। उन्होंने देखा कि इधरसे किसीने दरवाजा बन्द कर दिया है। उन्होंने दरवाजा खोलनेके लिये बडा जोर लगाया, पर वह नही खुला। वे समझ गये कि मैं कैद कर लिया गया! तोभी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, और जिधरसे दरवाजा खुला था उधरसे ही आगे बढे! उन्होंने सामने एक कमरेमें रोशनी देख उधर ही पैर बढाया। उस कमरेमें रोशनीके पास एक औरत बैठी थी। मि० ब्लेकने सोचा कि यही मोना जैक्सन है, पर ज्योंही वे उसके पास पहुंचे, त्योंही यह देखकर बडे हैरान हुए कि यह तो कोई और ही मालूम पडती है। मि० ब्लेकको इस तरह अपने कमरेमें आते देख उस औरतने बडे जोरसे बिगड कर कहा—"कैसा भकुआ आदमी है, जो इतनी रातको किसीके घरमें बिना कहे सुने घुसा चला आता है!"

मि० ब्लेकने भी बडी कडी आवाजमें कहा—"मोना-जैक्सन कहा है?"

स्त्री—"मैं क्या जानू, मोना-टोना कौन है? तू चोर है और चोरी या खून-खराबी करनेकी ही नीयतसे रातको मेरे घरमें घुस आया है। अच्छा, ठहर, मैं अभी तेरी खातिरदारी करती हूं।"

यह कह, उसने अपनी मेजके दराजमेंसे एक पिस्तौल निका-

ली और टेलीफोनकी ओर हाथ बढ़ाया। इतनेमें मि० ब्लेकने भी अपनी जेबसे पिस्तौल निकाली। यह देख, उस औरतने भट पिस्तौल छोड़ दी। मि० ब्लेककी आखोंके आगे अंधेरा छा गया। उन्होंने भी तुरत गोली दाग दी।सारा कमरा धुएसे भर गया। इतनेमें पीछेसे किसीने पकड़कर कहा—"बस, खबरदार!"

मि० ब्लेकने देखा कि कोई पीछे भी पिस्तौल ताने खड़ा है! वे थोड़ी देरके लिये घबरा उठे।

पांचवां परिच्छेद

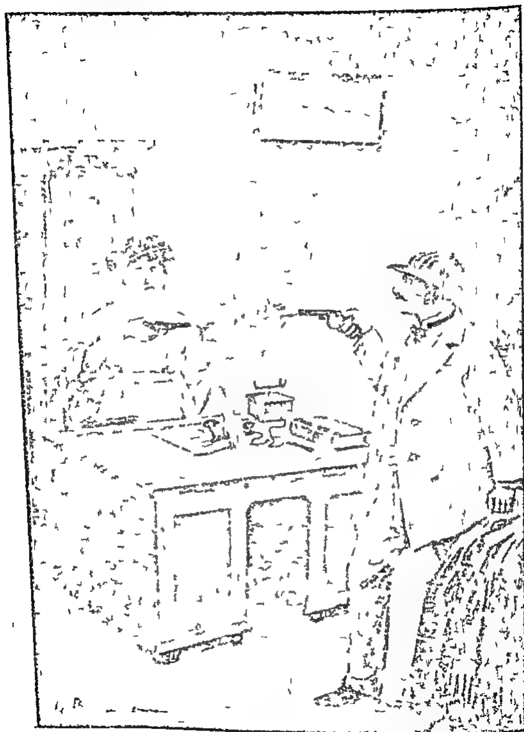


नये फन्दे

ब्लेकके पीछे खड़े हुए आदमीने पूछा—"क्यों भाई! यह क्या मामला है?"

आवाज ब्लेककी पहचानी हुई थी। उन्होंने देखा कि यह तो वही शोल्टोयार है। इसे देख उस औरतने कहा—"तुम बड़े अच्छे अवसरपर आये, नहीं तो यह मेरा सारा मालमता ...र चल देता और मेरी जान भी ले लेता। इसने मेरे लोहेके ... तोड़ना चाहा था।"

...ने एक अचरज भरी दृष्टिसे ब्लेककी ओर ... आपको विश्वास होता है कि मैंने



उस औरतने पिस्तौल निकाली और टेलीफोनकी ओर हाथ बढ़ाया। मि० ब्लेकने भी पिस्तौल निकाली। उस औरतने झट पिस्तौल छोड़ दी। मि० ब्लेकने भी तुरन्त गोली दाग दी। (पृ० ५५)

ली और टेलीफोनकी ओर हाथ बढ़ाया। इतनेमें मि० ब्लेकने भी अपनी जेबसे पिस्तौल निकाली। यह देख, उस औरतने झट पिस्तौल छोड दी। मि० ब्लेककी आखोंके आगे अधेरा छा गया। उन्होंने भी तुरत गोली दाग दी। सारा कमरा धुएसे भर गया। इतनेमें पीछेसे किसीने पकडकर कहा—"बस, खबरदार!"

मि० ब्लेकने देखा कि कोई पीछे भी पिस्तौल ताने खडा है! वे थोडी देरके लिये घबरा उठे!

पांचवां परिच्छेद



नये फन्दे

ब्लेकके पीछे खडे हुए आदमीने पूछा—"क्यों भाई! यह क्या मामला है?"

आवाज ब्लेककी पहचानी हुई थी। उन्होंने देखा कि यह तो वही शोल्टोयार है। उसे देख उस औरतने कहा—"तुम बडे अच्छे अवसरपर आये, नहीं तो यह मेरा सारा मालमता लेकर चल देता और मेरी जान भी ले लेता। इसने मेरे लोहेके सन्दूकको तोडना चाहा था।"

यह सुनते ही यारने एक अचरज भरी दृष्टिसे ब्लेककी ओर देखा। ब्लेकने कहा—"क्या आपको विश्वास होता है कि मैंने

ऐसा काम किया होगा ? यह बिलकुल झूठ बोलती है। मैंने तो उस कोनेमें रखे हुए सन्दूकको अबतक देखा भी नहीं था।"

यह सुन उस स्त्रीने बड़े जोरसे अट्टहास्य किया। इसी रुकने-पर बोली—"अरे,तू पुराना चोर है। देखो, पास ही इसके सन्दूक तोड़नेके हथियार पड़े हैं। देखो, सन्दूकपर इसकी अङ्गुलियोंके निशान भी पड़े होंगे।"

ब्लेकने कहा—"अरी, चल, चल। तू किसे यह किस्सा सुना रही है ? ये मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं !"

बारने उपेक्षा-पूर्ण स्वरमें कहा—"जहाजपरकी जान-पहचान किस कामकी ? मुसाफिरोंका परिचय ही कैसा ? मैं क्या जानने गया कि तुम्हारा चालचलन कैसा है ?"

स्त्रीने विजय-गर्वसे भरे हुए स्वरमें कहा—"चाहे जो हो, यह इतनी रातको मेरे घरमें क्यों घुस आया ? यही क्या कम जुर्म है ?"

बारने कहा—"सचमुच मि० रेक्स! तुम्हारी यह हरकत बड़ी बेजा है। अब तो इसी बेचारीकी भलमनसीपर तुम्हारा भाग्य निर्भर है।"

स्त्री—"मैं इसे यों नहीं जाने दूंगी। मैं अभी टेलीफोन करके पुलिसको खबर देती हूं।"

बात असलमें यह थी कि ब्लेकने बारको फसानेकी जो युक्ति सोची थी, वह सफल नहीं हुई। बारने ही उनकी चालाकी समझ कर पासके एक आफिसमें जाकर होटलवाली मेमको वह

सम्वाद दिया था, जो उसने ब्लेकको सुनाया और जिसके बल पर वे यहां आ पहुचे थे। इस मकानका दरवाजा जान बूझकर खुला छोड दिया गया था, और यह लडकी डील-डौलमें मोना जैक्सनसे मिलती-जुलती थी, इसलिये उसकी चाल जल्द काम कर गयी। सन्दूक तोडनेके हथियार पहलेहीसे वहा रखे हुए थे। मतलब यह कि उन्हें फंसानेके लिये पूरी बन्दिश बाधी गयी थी। अब यहाकी बेईमान पुलिसके पजेसे छुटकारा पानेके लिये उन्हें जो परेशानी उठानी पडेगी, उसे सोचकर ब्लेक बहुत चकराये। वे सारी चालें समझ गये।

इतनेमें उस स्त्रीने टेलीफोन द्वारा पुलिसको खबर दे दी और थोडी ही देरमें पुलिस आ पहुची। दरवाजेपर थाप पडी। बारने धोरेसे वहासे टल जाना चाहा, पर ब्लेकने उसे जाने नहीं दिया और झट उसकी कलाई थाम ली। इसी समय उस युवतीने पिस्तौल दागी, पर गोली उनके लगने नहीं पायी। हा, बार उनके हाथसे छूटकर भाग चला। वे भी उसका पीछा करते हुए एक दूसरे कमरेमें पहुचे। यहा उन्होंने बारका वही कोट खूटीपर लटकता हुआ पाया, जो वह जहाजपर पहने हुए था। यह देखते ही वे समझ गये कि या तो यह मकान बारका ही है या इसके मालिकोंके साथ उसकी गहरी जान-पहचान है। इसी समय उन्हें मकानमें बहुतसे आदमियोंके घुस पडनेकी आहट मालूम पडी। वे समझ गये कि पुलिसवाले भीतर आ गये। वे उस कमरेकी खिडकी खोलकर नीचे उतरनेका मौका देखने लगे

इशारा किया। मोटर खड़ी हो गयी। ब्लेक उसपर सवार हो गये। गाड़ी जाते-जाते ड्राइवरने कहा—"आपकी तो अजीब हालत हो रही है। क्या आप पुलिसवालोंके डरसे भागे फिरते हैं?"

ब्लेकने कहा—"अरे यार! तुम जल्दी-जल्दी गाड़ी हांको बातें पीछे करना।" यह कह उन्होंने अपनी पिस्तौल निकाल कर हाथमें ले ली। ड्राइवर उनका मतलब समझ गया। उसने हंसकर कहा—"आप घबरायें नहीं, मैं आपको पुलिससे नहीं पकड़वाऊंगा। मुझे क्या गरज पड़ी है।"

इसके बाद उन्होंने संक्षेपमें अपनी कथा उससे कह सुनायी। न जाने क्यों, उनका मन उनसे कह रहा था कि तुम इस अपरिचित मनुष्यका विश्वास कर सकते हो। बातें करते-करते उस ड्राइवर-ने कहा कि मैं इस मोटरका ड्राइवर नहीं हूं। इसका ड्राइवर मेरा एक दोस्त है, जो हार्डमैन-नामक स्थानमें रहता है, आप वहीं चलें और मजेसे नहायें-खायें। वह मकान इस समय एक-दम खाली है। उसका मालिक 'लियो' शहरसे बाहर गया हुआ है। ब्लेकने उसकी बातका विश्वास कर वहीं जाना स्वीकार किया। इस समय उनका जो साथी था, उसका नाम था 'लाफी-आर्टर।' रास्तेमें उन्होंने लाफीसे अपने अमेरिका आनेका उद्देश्य बतला दिया। सुनकर लाफीने कहा—"अहा! तब तो आप मुझे खूब मिले। मैं खुद भी रुपये पैसेवाला आदमी हूं। मुझे भी इन शेयर-के दलालोंने बहुत सताया है, इसलिये केवल मनोविनोदके ही लिये

नहीं, बल्कि अपने स्वार्थके लिये भी मैं आपकी पूरी सहायता करूंगा।"

हार्डमैन-मुहल्लेमें लिवीके मकानपर पहुंचकर दोनों नये मित्रोंने स्नानाहार किये और इसके बाद पासके एक बड़े भारी होटलमें पहुंचे। वहा पहुंचकर आर्टरने होटलके मालिकसे मि० ब्लेकका परिचय कराते हुए कहा—"इनका नाम मि० रेक्स है। इनका घर लण्डनमें है।। ये कुछ दिनोंसे यहा आये हुए हैं और अभी कुछ दिन ठहरेंगे।"

होटलवालेने बड़ी प्रसन्नताके साथ उनसे हाथ मिलाया। बोला—"मेरा काम ऐसे झंझटका है कि मैं किसीसे जीभरकर बातें भी नहीं कर पाता। आप यहा रहें तो कभी कभी मुझसे मिला करें।"

इसके बाद मि० ब्लेकने वहीं डेरा जमाया और एक कमरेमें आसन जमाकर बैठे हुए सिगरेट पीने लगे। इसी समय एक युवती वहा आ पहुंची। वह उन्हें पूर्व-परिचित-सी जान पड़ती थी। मि० ब्लेक उसे देखकर बड़े चकराये। उस लड़कीने उनको देखते ही कहा—"क्यों, मि० ब्लेक! आप यहां कहा?"

वे बड़े चक्करमें पड़े,तोभी अपनेको सम्हालकर बोले—"मेरा नाम रेक्स है।"

कुछ देर कौतूहल भरी दृष्टिसे उनकी ओर देखकर उसने कहा—"मि० ब्लेकसे आपका चेहरा बहुत कुछ मिलता-जुलता

इशारा किया। मोटर खड़ी हो गयी। ब्लेक उसपर सवार हो गये। गाड़ी जाते-जाते ड्राइवरने कहा—"आपकी तो अजीब हालत हो रही है। क्या आप पुलिसवालोंके डरसे भागे फिरते हैं?"

ब्लेकने कहा—"अरे यार! तुम जल्दी-जल्दी गाड़ी हांको, बातें पीछे करना।" यह कह उन्होंने अपनी पिस्तौल निकाल कर हाथमें ले ली। ड्राइवर उनका मतलब समझ गया। उसने हंसकर कहा—"आप घबरायें नहीं, मैं आपको पुलिससे नहीं पकड़वाऊंगा। मुझे क्या गरज पड़ी है।"

इसके बाद उन्होंने संक्षेपमें अपनी कथा उससे कह सुनायी। न जाने क्यों,उनका मन उनसे कह रहा था कि तुम इस अपरिचित मनुष्यका विश्वास कर सकते हो। बातें करते-करते उस ड्राइवर-ने कहा कि मैं इस मोटरका ड्राइवर नहीं हूं। इसका ड्राइवर मेरा एक दोस्त है, जो हार्डमैन-नामक स्थानमें रहता है, आप वहीं चलें और मजेसे नहायें-खायें। वह मकान इस समय एक-दम खाली है। उसका मालिक'लिवो'शहरसे बाहर गया हुआ है। ब्लेकने उसकी बातका विश्वास कर वहीं जाना स्वीकार किया। इस समय उनका जो साथी था,उसका नाम था 'लाफी आर्टर।' रास्तेमें उन्होंने लाफीसे अपने अमेरिका आनेका उद्देश्य बतला दिया। सुनकर लाफीने कहा—"अहा! तब तो आप मुझे खूब मिले। मैं खुद भी रुपये पैसेवाला आदमी हूं। मुझे भी इन शेयर-के दलालोंने बहुत सताया है,इसलिये केवल मनोविनोदके ही लिये

इसके बाद वह कुछ देरतक बातें सुनती रही। तदनन्तर एकाएक बोल उठी—"मैं कह रही हूं, ब्लेक यहीं हैं। मैंने उन्हें बड़ी देरसे अपनी नज़रों-तले रखा है। (कुछ ठहरकर) तुम अपना पूर्व निश्चय पूरा करो। इस होटलके चारों ओर चक्कर काटते रहो।"

यह सुन मि० ब्लेकको इस बातका पूरा निश्चय हो गया कि यह भी बार और उसके साथियोंसे मिली हुई है। हो सकता है कि अभी-अभी यह बारसे ही बातें कर रही हो। उन्होंने सोचा—'जब यह यहां पहुंची है, तब बीस फ़िस्दी इसका स्वामी भी यहीं आया हुआ है। पर वह इस होटलमें क्यों टिकी हुई है ?" वे इसी तरह सोच रहे थे कि होटलका मालिक एक प्रौढ़ा रमणीको साथ लिये हुए उनके पास आया और बोला—"इस बेचारीके साथ कोई नाचनेको तैयार ही नहीं होता, इसलिये यदि आप ही इसके अरमान पूरे करें, तो बड़ी कृपा हो।"

लाचार ब्लेकने उसके साथ नाचना स्वीकार किया; पर एक तो उसे नाचना नहीं आता था, दूसरे, उसका दम जल्द फूल उठा, इसलिये नाच बन्द करके दोनों सुस्ताने लगे। इस स्त्रीके बदनपर खूब जवाहरात लदे हुए थे, इसके सिवा इसमें और कोई विशेषता नहीं थी। उसका नाम मिसेज वान-नेलर था। वह चुपचाप बैठी हांप रही थी। ब्लेक उसकी ओरसे मुंह फेरे हुए विलनकी ही बात सोच रहे थे। इतनेमें वह औरत एकाएक चिल्ला उठी—"ऐ है! मेरा हीरेका हार खो गया! कौन चुरा ले

है। इसीसे मैं भ्रममें पड गयी, माफ करेंगे। मेरा नाम ि
ब्राडउड है।" मि० ब्लेक उसे पहचानते थे। उसका नाम एलि
हेल था और वह गिल्बर्ट-हेल नामक एक पुराने बदमाश
स्त्री थी, इसलिये वे समझ गये कि यह मुझे चकमा दे रही
मि० ब्लेकसे इन दोनों मिया-बीबीकी कितनी बार भिड़न्त
चुकी थी,इसलिये वे जानते थे कि ये दोनों छटे हुए बदमाश
वे सोचने लगे—"जब यह आयी है, तब इसका खसम भी ज
यहा आया होगा। ये दोनों भला न्यूयार्कमें किस लिये ब
हैं? इसी होटलमें यह किस लिये आयी है?"

थोडी देर बाद एलिनने कहा—"क्या आज आप मेरे स
नाचेंगे?"

मि० ब्लेकने झटसे हाथ बढाकर उसका प्रस्ताव स्वीकार
लिया। उस दिन रातको खाना खानेके बाद दोनों सब
साथ साथ नाचे। मि० ब्लेकने इसीलिये उसका प्रस्ताव स
कार किया था, जिसमें उन्हे उस औरतके यहा आनेका का
मालूम करनेका मौका मिले, पर वह भी एक ही छटी हुई थ
उसने एक भी पतेकी बात मुंहसे नहीं निकाली। वह भी अ
दावपर थी। नाच खतम होनेपर वह टेलीफोनवाले कमरेमें च
गयी। ब्लेक दबे पांवों उसके पीछे लगे और छिपकर सु
लगे। किसको उसने टेलीफोन किया, यह तो मि० ब्लेकको
मालूम हो सका, पर वे कुछ बातें सुन सके।

वह औरत कह रही थी—"हा, मैं हू एलिन। मैं हार्डमैं
बडे होटलसे बोल रही हू। मि० ब्लेक भी यहीं हैं।"

इसके बाद वह कुछ देरतक बातें सुनती रही। तदनन्तर एकाएक बोल उठी—"मैं कह रही हूं, ब्लेक यहीं हैं। मैंने उन्हें बड़ी देरसे अपनी नजरों-तले रखा है। (कुछ ठहरकर) तुम अपना पूर्व निश्चय पूरा करो। इस होटलके चारों ओर चक्कर काटते रहो।"

यह सुन मि० ब्लेकको इस बातका पूरा निश्चय हो गया कि यह भी बार और उसके साथियोंसे मिली हुई है। हो सकता है कि अभी-अभी यह बारसे ही बातें कर रही हो। उन्होंने सोचा—"जब यह यहां पहुंची है, तब बील सिस्वे इसका स्वामी भी यहीं आया हुआ है। पर यह इस होटलमें क्या टिकी हुई है?" वे इसी तरह सोच रहे थे कि होटलका मालिक एक प्रौढ़ा रमणीको साथ लिये हुए उनके पास आया और बोला—"इस बेचारीके साथ कोई नाचनेको तैयार ही नहीं होता, इसलिये यदि आप ही इसके अरमान पूरे करें, तो बड़ी कृपा हो।"

लाचार ब्लेकने उसके साथ नाचना स्वीकार किया, पर एक तो उसे नाचना नहीं आता था, दूसरे, उसका दम जल्द फूल उठा, इसलिये नाच बन्द करके दोनों सुस्ताने लगे। इस स्त्रीके बदनपर खूब जवाहरात लदे हुए थे, इसके सिवा इसमें और कोई विशेषता नहीं थी। उसका नाम मिसेज वान-नेलर था। यह चुपचाप बैठी हांप रही थी। ब्लेक उसकी ओरसे मुंह फेरे हुए एलिनकी ही याद सोच रहे थे। इतनेमें यह औरत एकाएक चिल्ला उठी—"हे है! मेरा हीरेका हार खो गया! कौन चुरा ले

गया ? दौड़ो रे बाबा ! चोर है,चोर !" थोड़ी ही देरमें इस चिल्लाह-टकी आवाज सुनकर बहुतसे आदमी वहां जमा हो गये। लोगोंने कहा—"नाचते समय हारकी कील खुल गयी होगी, कहीं नीचे ही गिरा होगा, खोजिये।"

मि० ब्लेक भी तमाम कोने-कतरेमें खोजने लगे। वे ज्योंही एक कुरसीके नीचे ढूंढ़नेके लिये झुके, त्योंही वह औरत उनके कोटका कोना पकड़कर चिल्ला उठी—"अरे बदमाश कहींका!" इसी समय उनके कोटकी जेबसे हार नीचे गिर पड़ा। इस मामलेसे मि० ब्लेक तो भौंचकसे हो रहे—वे मारे पश्चात्तापके अपना होंठ काटने लगे। सब लोग अचरज-भरी दृष्टिसे उन्हींकी ओर देखने लगे। वे समझ गये कि इस बार उनके साथ खूब चाल खेली गयी। या तो इसी औरतने हार मेरी जेबमें रख दिया है या और किसीने मुझे अन्यमनस्क देख इसके गलेका हार मेरे कोटमें डाल दिया है।"

लाचार ब्लेकने कहा—"देखिये, मैंने आपका हार नहीं चुराया।"

उस प्रौढ़ाने गरदन टेढ़ी करके कहा-"तब यह तुम्हारी जेबसे कैसे बरामद हुआ ? तुम तो बड़े ही खोटे आदमी मालूम होते हो।"

सब लोग मि०ब्लेकके विरोधी बन गये और लेडी साहिबाको पुलिसमें खबर देनेकी राय देने लगे। होटलवालेने कहा—"जब आपकी चीज मिल ही गयी, तब फिर हल्ला गुल्ला करनेका क्या काम है ?"

उसने टूटे तारकी तरह झनझनाते हुए कहा—"वाह ! क्या कहना है ? यहां ऐसे ही आदमियोंको तुम जमा किया करोगे और सब लोग चुप रह जाया करेंगे, तब तो कुछ दिनोंमें यह जगह बदमाशोंका खासा अड्डा ही बन जायेगी। तुम्हें अपने अतिथियोंके जानोमालकी रखवाली करनी चाहिये और ऐसे ऐसे छिपे रुस्तमोंको पूरा सबक सिखा देना चाहिये।"

इसके बाद उसने होटलके एक आदमीको पुलिसमें टेलीफोन करनेके लिये कहा। थोड़ी ही देरमें पुलिसके दो अफसर वहां आ पहुचे। उनके साथ साथ एक सुफेदपोश और वही हमारा पूर्व परिचित शोल्डोवार था।

बारने मुस्कुराते हुए कहा—"यह आदमी पक्का चोर है। अभी घंटे-दो घंटे पहले यह फाटनवर्थ भवनमें एक आदमीका सन्दूक तोड रहा था। वहासे यह न जाने कैसे निकल भागा, नहीं तो वहीं गिरफ्तार हो जाता।"

इसी समय होटलका मालिक पूर्वोक्त आर्टरके साथ वहा आया और इस आकस्मिक घटनापर आश्चर्य प्रकट करने लगा।

होटलवालेने बारसे पूछा—'क्या आप इस आदमीको पहचानते हैं ?"

बार—"बखूबी पहचानता हू। थोड़ी देर ठहरिये, बाहर एक लेडी खड़ी हैं, वे भी इसे पहचानती हैं। मैं अभी उनको बुलवाता हूं।"

यह कह चार बाहर गया और उसी लेडीको ले आया, जिसने मि० ब्लेकपर सन्दूक तोड़नेका अपराध लगाया था। मि० ब्लेकको उंगलीसे बतलाते हुए चारने उस स्त्रीसे पूछा—"लीला! तुम इस आदमीको पहचानती हो?"

उसने कहा—'हां, यही तो मेरे घरमें घुसकर मेरा सन्दूक तोड़ रहा था। खैरियत हुई जो मैंने इसे ऐन मौकेपर पकड़ लिया। यह तो अपनी पिस्तौल तान ही चुका था और इसने मुझे खतम ही कर डाला होता, अगर तुमने मेरी चिल्लाहट सुन झटपट आकर मुझे बचा न लिया होता।"

मिसेज वान-नेलरने कहा—"और इसने मेरा हार अभी उड़ा ही लिया था, और ले-देकर चल दिया होता, मगर मुझे झट याद आ गयी और मैंने शोर मचाना शुरू किया। पुलिसवालो! देखते क्या हो? इसे अभी गिरफ्तार करो।"

पुलिसवालेने ज्योंही उनकी ओर हाथ बढ़ाया, त्योंही मि० ब्लेकने कहा—"सुनिये! यह कहती हैं कि इनका हार मेरी जेबमें था। पर अगर मैं चोर हू, तो बड़ा ही कच्चा हूं। मैं चोरी करके ऐसी बेवकूफी क्यों करता कि इनका माल चुराकर इन्हींके पास बैठा रहता? बात यह है कि किसीने परदेके पीछेसे मेरी जेबमें यह हार डाल दिया है। इनका हार या तो नाचते समय खुलकर गिर पड़ा है या किसीने इन्हें अनमनी पाकर धीरेसे इनकी गरदनसे उतार लिया है। यह दूसरी औरत जो मुझे सन्दूक तोड़नेका अपराधी बतलाती है, वह भी सरासर झूठी है।

क्या यह सच नहीं है कि मैं यहां मि० आर्टरके ही साथ आया हूं?" यह कह उन्होंने आर्टरकी ओर देखा, पर वह कुछ भी न कह सका।

वारने कहा—"पर आर्टरसे आपकी मुलाकात कहां हुई हज रत?" आर्टर बड़े घपलेमें पड़ा। उसे यह स्वीकार करनेका साहस नहीं हुआ कि उसीने मि० ब्लेकको पुलिसके हाथसे निकल भागनेमें मदद दी है। आर्टरकी इस घबराहटको मि० ब्लेक ताड़ गये। उन्होंने देखा कि अब अपनेको छिपाये रखना व्यर्थ है, क्योंकि एलिन और वार तो उन्हें पहचानते ही हैं। यही सोचकर उन्होंने कहा—"आर्टर! तुम चुप क्यों हो गये? तुम इन्हें मेरा असल परिचय दे सकते हो।"

आर्टरने धीरेसे कहा—"इनका नाम सेक्सटन ब्लेक है। ये लन्दनके नामी गरामी जासूस हैं। मैं अपनी गाड़ीमें बैठा चला आ रहा था, उसी समय इन्हें देख अपने साथ लेता आया। तब से ये बराबर मेरे साथ हैं।"

ब्लेक—"फिर मैं काटनवर्थ भवनमें चोरी करने कब गया?"

होटलवालेका मुंह भी अबके खुला। उसने कहा—'मुझे मि० ब्लेककी बात ठीक मालूम होती है। मैं जब हल्ला सुनकर इधर आ रहा था, तब इस पर्देके पीछे एक औरत खड़ी मालूम पड़ी थी। वह मुझे देखते ही खिसक गयी। मैंने देखा कि उसके एक पैरके मोजेमें एक जगह छेद है।"

अब तो इस तरहके मोजेवाली औरतकी खोज ढूंढ होने लगी,

पर कहीं वैसे मोजे पहने हुई कोई स्त्री नहीं मिली। होटलवाला एक मिस कानवे नामकी युवतीको ले आया और बोला—"मैंने जिस औरतको देखा था,वह कुछ इसीके डीलडौलकी थी।"

इतनेमें वह प्रौढा फिर चिल्ला उठी—"यह क्या? मेरा ब्रूच* भी गायब है! जरूर यह औरत इस आदमीसे मिली हुई है। मैं कदापि यह नहीं मान सकती कि यह आदमी जासूस है। आप लोग इसकी तलाशी लीजिये।"

तलाशी लेनेपर उसके थैलेमेंसे उस लेडीका ब्रूच भी निकल पड़ा। लोग बड़े अचम्भेमें पड़ गये। मिस कानवेके तो चेहरेपर हवाइयां उड़ने लगीं। मि० ब्लेकने कहा—"होटलके मालिकने साफ देखा है कि उस औरतके मोजेमें छेद है। फिर इस बेचारी-पर अपराध लगाना व्यर्थ है। इसके थैलेमें ब्रूच उसी तरह पहुंच गया होगा, जैसे मेरी जेबमें इसका हार पहुंचा था।"

होटलके मालिकने कहा—"फिर वह चोर औरत कहां गयी?"

मि० ब्लेकने कहा—"देखिये, इस होटलमें लन्दनके एक मशहूर बदमाशकी औरत, जिसका नाम एलिन-हेल है, यहां ठहरी हुई है। वह अभी थोड़ी देर पहले यहां नाच रही थी। उसने यहां आकर अपना कौन-सा नाम बतलाया है, यह तो मैं नहीं जानता; पर इतना जरूर मालूम है कि वह जो न करे, थोड़ा है। उसका डील डौल कुछ-कुछ मिस कानवेसे मिलता-जुलता है।"

* ब्रूच—गलेकी धुकधुकी।

थोड़ी देरमें होटलका मालिक हर जगह ढूंढ आया, पर उसे एलिन-हेल कहीं न दिखाई दी। उसके कमरेमें उसकी जूतिया छूट गयी थीं और वह दस ही मिनट पहले होटलसे बाहर हुई है, ऐसा नौकरोंकी जबानी मालूम हुआ। उसने पुलिसवालोंके पास आकर अपने अनुसन्धानकी बात कह सुनायी और एलिन की जूतिया भी दिखलायीं। पुलिसवालोंने मि० ब्लेकका पास-पोर्ट देखा और देख भालकर कहा—"आपके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है, इसलिये हम आपको इस जुर्मसे बरी किये देते हैं।"

इसके बाद पुलिसवालोंके साथ जो सुफेदपोश आदमी आया था, उसने मि० ब्लेकको एक ओर ले जाकर कहा—"मि० ब्लेक! सुनिये, आपके बहुतसे दुश्मन आपके पीछे लगे हैं, इसलिये आप दूसरे ही जहाजसे इंगलैण्ड लौट जाइये, नहीं तो आपकी जान-की खैर नहीं है।"

ब्लेक—"क्यों?"

सुफेदपोश—"क्यों? सो मैं नहीं जानता। सिर्फ मित्रभावसे आपको सलाह दे रहा हूं।"

ब्लेक चुप रह गये। अपना-सा मुंह लिये यार पुलिसवालोंके साथ लौट गया। ब्लेक समझ गये कि बारने यहा आकर किसी उच्च अधिकारीसे घनिष्ठता पैदा कर ली है। उस अधिकारीका पुलिसवालोंपर पूरा दबाव है। इसीलिये वह ऐसी चालें चल रहा है। खैर, वे कपड़े उतारकर रातको जिस समय सोने जा रहे थे, उसी समय टेलीफोनकी घंटी बज उठी। उन्होंने च गा

कानके पास ले जाकर कहा—"कौन है?" पूछनेवालेने पूछा—"क्या आप ही मि० ब्लेक हैं?" उनके 'हां' कहनेपर उस आदमीने कहा—"कल जो जहाज खुल रहा है, उसीसे आप इंगलैण्ड लौट जाइये, इसीमें आपकी भलाई है। आप इस शहरमें ही नहीं, सारे संयुक्त-राज्यमें कहीं रहने नहीं पायेंगे। अगर मेरे मना करनेपर भी आप ठहरे रहे, तो चाहे आप प्रेसिडेन्टके ही कमरेमें क्यों न जा छिपें, तोभी आपकी खैरियत नहीं है। जिसकी खोजमें आप फिर रहे हैं, उसे छोड़कर चले जाइये, तभी भला है। नहीं मानियेगा तो इसका कड़ुवा फल आपको चखना होगा। आपका सिर सही-सलामत धड़पर नहीं रहने पावेगा।"

ब्लेकने यह चुनौती स्वीकार कर ली। वे कुछ भी न बोले। उन्होंने धीरेसे कहा—"ब्लेक ऐसी-ऐसी बन्दर-घुड़कियोंसे नहीं डरता।"



छठा परिच्छेद

टिङ्कर और मेना जैक्सन

रेलगाड़ीसे उतरकर टिङ्कर थोड़ी देरतक वेटिङ्गरूममें ठहरा रहा, इसके बाद वह फार्टरेट-जङ्क्शनको जानेवाली दूसरी गाड़ीपर सवार होकर घंटेभरके भीतर ही 'आरोचर' पहुंच गया। वहां पहुंचकर उसने पूर्वोक्त दूकानदारके घरके पास ही एक खण्डहरमें डेरा डाल दिया, जहांसे उस दूकानदारके घरका हालचाल उसे आसानीसे मिल सकता था। उसने वहीं बड़ी इन्तज़ारी की, पर मिस जैक्सन नहीं दिखाई दी। इसी तरह सारा दिन बीत गया, रात हो आयी। तोभी टिङ्करने हिम्मत नहीं हारी। उसे पूरा विश्वास था कि अगर मिस जैक्सन आयेगी तो अवश्य ही रातको अंधियारीमें छिपकर आयेगी। वह अंगूठी उसके चाहनेवाले आर्थ-डेयरने ही उसे दी होगी, इसलिये वह ज़रूर उसे लेने आयेगी।

एक एक करके पास पड़ोसकी तमाम रोशनियां बुझ गयीं। प्राय सारा गांव सो गया, पर तोभी कहीं मिस जैक्सनका पता नहीं था। टिङ्करको बड़े जोरसे भूख लग आयी—प्यासके मारे उसका बुरा हाल होने लगा। लाचार वह वहांसे उठकर जानेका इरादा कर ही रहा था कि इसी समय उसे एक मोटर

आती हुई मालूम पड़ी। उसने झांककर देखा कि एक आदमी काली पोशाक पहने दूकानके पास आया और किवाड़ खट-खटाने लगा। भीतरसे किसीने आकर किवाड़ खोल दिये। उसके हाथमें रोशनी थी। उसीके प्रकाशमें टिङ्करने देखा कि यह तो मिस जैक्सन नहीं, बल्कि एक नौजवान है। इधर गाड़ीकी रोशनीके सहारे उसने यह भी मालूम कर लिया कि गाड़ीमें सिवा मोटर चलानेवालेके और कोई नहीं बैठा है। तोभी अपने दिलकी तसल्लीके लिये वह दबे पावों मोटरके पास चला आया और झांककर देखने लगा कि कहीं वह किसी कोनेमें तो नहीं छिपी है। पर उसकी यह आशा भी पूरी नहीं हुई। लाचार वह फिर उसी जगह चला आया। थोड़ी देरमें वह नौजवान दूकान-दारसे बातें करके चला आया और मोटरपर सवार होकर जिधर-से आया था, उधर ही चला गया। उसके बाहर निकलते ही दूकानवालेने किवाड़ बन्द करना चाहा। इसीलिये वह लालटेन लिये हुए बाहरतक यह देखने आया कि मोटर गयी या नहीं। टिङ्करने सोचा, कहीं यह किवाड़ बन्द कर लेगा तो रात-भर भूखों मरना पड़ेगा, इसलिये वह झटपट दौड़ा हुआ उसके पास पहुंचा और पूछने लगा—"क्यों साहब! मेरी बहन फिर यहां आयी थी या नहीं?"

दूकानदारने बड़ी सन्देहपूर्ण दृष्टिसे उसकी ओर देखते हुए कहा—"आज तो इतने अजीब अजीब लोग आये कि मैं तो हैरान हो गया हूं। पहले तो मैंने तुम्हें पहचाना ही नहीं। कहो, कहां थे? अजी, वह तो अभीतक नहीं आयी।"

टिङ्करने कहा—"मैंने अभीतक भोजन नहीं किया है। अगर कुछ बचा हो तो खिला दीजिये। बड़ी भूख लगी है।"

पहले तो दूकानदार इतनी रातके एक अपरिचितके लिये कष्ट उठानेको तैयार होना नहीं चाहता था, पर पीछे न जाने क्या सोचकर उसने अपनी स्त्रीको पुकार कर टिङ्करके लिये ठंडी रसोई मंगवायी। टिङ्करने उसी ठण्डे भोजनपर सन्तोष करते हुए बातें करनी शुरू की। उसने कहा—"अच्छा, भाई! इतने लोग मेरी बहनको क्यों खोजते-फिरते हैं?"

दूकानदार—"क्या बताऊं? मुझे तो इस तरहका मौका आजतक नहीं मिला था। एकके बाद दूसरे आ आकर सवालोंके मारे नाकमें दम किये देते हैं।"

टिङ्कर—"बड़ा ताज्जुब है! मेरी बहनके लिये औरोंके परेशान होनेका तो कोई सबब ही नहीं है।"

दूकानदार—"तो क्या अभी अभी जो नौजवान मोटरपर चढ़ा आया था, वह भी उसके घरका नहीं है?"

टिङ्कर—"हरगिज नहीं। वह क्या कहता था?"

दूकानदार—"कुछ भी नहीं—सिर्फ वह मेरी स्त्रीके वे कपड़े दे गया, जो वह लड़की उस दिन पहनकर चली गयी थी और उसकी अंगूठी मुझसे मांग ले गया। उसने कहा कि वह और कहीं चली गयी है, अब नहीं आयेगी। हां, मुझे उसने धन्यवाद कहला भेजा है।"

टिङ्करने देखा कि यह तो खासी दिल्लगी हुई। अंगूठी भी

होकर लौटा आ रहा था, तब उसने एक कोनेमें रद्दी कागजोंकी एक टोकरी देखी। सब कागजोंके ऊपर ही एक स्याही सोखका टुकड़ा पड़ा था। अब तो टिङ्कर समझ गया कि मिचल जरूर यहां आया था। टिङ्करने सोचा—"अगर यह युवती मिचेलसे मिली हुई है,तो जरूर ही यह स्याही-सोख इनका कोई इशारा है। तभी ये जहां जाते हैं, वहीं, ऐसे स्याही सोखका टुकड़ा मिलता है।"

नाश्ता-पानी करके टिङ्कर एलेन टाउनमें एलेन हाउस नामक होटलमें पहुंचा, पर वहां भी उसे यही मालूम हुआ कि कप्तान येटस यहां आये जरूर थे, पर वे ठहरे नहीं, क्योंकि जिन दो आदमियोंकी खोजमें वे यहां आये थे, वे लोग उनके पहुंचनेके पहले ही चल दिये थे। यहांके नौकरसे टिङ्करने पूछा—"अच्छा, जो लोग यहां कप्तान येट्सके आनेके पहले आकर ठहरे हुए थे, उनके कमरेमें तुम लोगोंको काले रङ्गका स्याही-सोख मिला था?"

नौकर—"हां, मिला था। हमलोगोंने ऐसा मोटा और विचित्र काले रङ्गका स्याही सोख तो आजतक देखा ही नहीं था। सोचते-सोचते टिङ्करने विचार किया कि ये लोग इसीलिये काले रङ्गका सोख्ता व्यवहार करते हैं, जिसमे [illegible] निशान किसीको मालूम न पड़ें, पर जब आर्रे-डे [illegible] मशीन पासमें है ही, तब फिर काले स्याही [illegible] बांधे फिरनेकी क्या जरूरत है? उसने अपने

ऐसे स्याही सोख़के रखे थे, उन्हें निकाल कर देखा, पर कहीं किसीमें स्याहीका दाग नहीं था। हां, एकमें एक जगह आगसे जलनेका निशान था। टिङ्करने फिर उन टुकडोंको अपनी जेबमें रख लिया। इस समय उसके पास रुपये भी बहुत कम रह गये थे, इसीलिये वह कुछ कुछ घबरा रहा था। उसने सेन्ट रेजिस होटलमें टेलीफोन करके पूछा, पर मालूम हुआ कि मि० रेक्स न मालूम कहां चले गये। यह सुनकर वह बहुत घबराया। अन्तमें उसने अपनी मोटरके ड्राइवरसे पूछा कि तुम यहांके आस-पासके सब स्थानोंसे परिचित हो या नहीं। उसने कहा कि मुझे सब स्थानोंका पता नहीं है,दूसरे, आपका यह सफर बेतरह लम्बा हुआ जा रहा है, भाडा भी बहुत हो गया, इसलिये आप कुछ रुपये दें, तो मैं आगे बढ़ूं। टिङ्करने उसका भाडा चुकता कर दिया,पर उसके पास बहुत ही कम रुपये बच गये थे, इसलिये उसके चहरेपर चिन्ताकी छाप पडी देख मोटरवाला समझ गया कि इसके पास मालमता कम रह गया है। यह देखकर उसने कहा—"अब मैं आपको आगे नहीं ले जा सकता। कौन जाने आप मेरा भाडा चुकता करेंगे या नहीं? मुझे भूख लगी है, मैं किसी होटलमें जाकर पहले पेट भरता हूं। इसके भीतर आप रुपयेका प्रबन्ध कीजिये।"

लाचार वह मन मारे रेलवे स्टेशनतक चला आया। इसी समय प्लेटफार्मपर एक गाडी आ लगी। उसने देखा कि एक लाल बालों-वाला आदमी रेलगाडीपर चढनेकी कोशिश कर रहा है। इसकी

होकर लौटा आ रहा था, तब उसने एक कोनेमें रद्दी कागजोंकी एक टोकरी देखी। सब कागजोंके ऊपर ही एक स्याही सोखका टुकड़ा पड़ा था। अब तो टिङ्कर समझ गया कि मिचल जरूर यहां आया था। टिङ्करने सोचा—"अगर यह युवती मिचेलसे मिली हुई है,तो जरूर ही यह स्याही-सोख इनका कोई इशारा है। तभी ये जहां जाते हैं, वहीं, ये न स्याही-सोखका टुकड़ा मिलता है।"

नास्ता-पानी करके टिङ्कर एलेन टाउनमें एलेन हाउस नामक होटलमें पहुंचा, पर वहां भी उसे यही मालूम हुआ कि कप्तान येटस यहां आये जरूर थे, पर वे ठहरे नहीं, क्योंकि जिन दो आदमियोंकी खोजमें वे यहां आये थे, वे लोग उनके पहुंचनेके पहले ही चल दिये थे। वहांके नौकरसे टिङ्करने पूछा—"अच्छा, जो लोग यहां कप्तान येट्सके आनेके पहले आकर ठहरे हुए थे, उनके कमरेमें तुम लोगोंको काले रङ्गका स्याही-सोख मिला था?"

नौकर—"हां, मिला था। हमलोगोंने ऐसा मोटा और विचित्र काले रङ्गका स्याही सोख तो आजतक देखा ही नहीं था।

सोचते सोचते टिङ्करने विचार किया कि ये लोग इसीलिये काले रङ्गका सोख्ता व्यवहार करते हैं, जिसमें इसपर उठे हुए निशान किसीको मालूम न पड़ें, पर जब आर्ब-डेयरकी दुरही ... पासमें है ही, तब फिर काले स्याही सोखका पुलिन्दा फिरनेकी क्या जरूरत है? उसने अपने पास जितने टुकड़े

ऐसे स्याही सोखके रखे थे, उन्हें निकाल कर देखा; पर कहीं किसीमें स्याहीका दाग नहीं था। हां, एकमें एक जगह आगसे जलनेका निशान था। टिङ्करने फिर उन टुकडोंको अपनी जेबमें रख लिया। इस समय उसके पास रुपये भी बहुत कम रह गये थे, इसीलिये वह कुछ कुछ घबरा रहा था। उसने सेन्ट रेजिस होटलमें टेलीफोन करके पूछा, पर मालूम हुआ कि मि० रेक्स न मालूम कहां चले गये। यह सुनकर वह बहुत घबराया। अन्तमें उसने अपनी मोटरके ड्राइवरसे पूछा कि तुम यहांके आस-पासके सब स्थानोंसे परिचित हो या नहीं। उसने कहा कि मुझे सब स्थानोंका पता नहीं है,दूसरे, आपका यह सफर बेतरह लम्बा हुआ जा रहा है, भाडा भी बहुत हो गया, इसलिये आप कुछ रुपये दें, तो मैं आगे बढ़ूं। टिङ्करने उसका भाडा चुकता कर दिया,पर उसके पास बहुत ही कम रुपये बच गये थे, इसलिये उसके चहरेपर चिन्ताकी छाप पडी देख मोटरवाला समझ गया कि इसके पास मालमता कम रह गया है। यह देखकर उसने कहा—"अब मैं आपको आगे नहीं ले जा सकता। कौन जाने आप मेरा भाडा चुकता करेंगे या नहीं? मुझे भूख लगी है, मैं किसी होटलमें जाकर पहले पेट भरता हूं। इसके भीतर आप रुपयेका प्रबन्ध कीजिये।"

लाचार वह मन मारे रेलवे स्टेशनतक चला आया। इसी समय प्लेटफार्मपर एक गाडी आ लगी। उसने देखा कि एक लाल बाल वाला आदमी रेलगाडीपर चढनेकी कोशिश कर रहा है।

बगलसे एक औरत भी निकल आयी, जिसे टिङ्करने झट पहचान लिया। वह थी एलिन हेल! टिङ्करको यह नहीं मालूम था कि इन दिनों एलिन और उसका स्वामी यहीं हैं; पर पिछले दिनों इन दोनोंने जैसे-जैसे काण्ड किये थे, उन्हें याद कर टिङ्करको यह जाननेका बड़ा कौतूल हुआ कि यह पलेनटाउनमें क्या करने आयी हैं? जब वह लाल बालोंवाला आदमी गाड़ीपर सवार हो गया, तब एलिन स्टेशनके बाहर हुई। टिङ्कर उसके पीछे लगा। उसने देखा कि वह उस नगरके प्रसिद्ध मुहल्ले हैमिल्टन स्ट्रीटमें आकर एक दूकानमें घुस गयी। टिङ्करने देखा, कि उसने अपने थैलेसे काले रङ्गका स्याही-सोख निकाल कर दूकानदारसे पूछा—"क्या तुम्हारे पास इस तरहका स्याही-सोख है?"

दूकानदारने उसके हाथसे सोख्ता लेकर उलट-पुलटकर देखा और झट भीतर जाकर एक फटा हुआ सोख्ता उठा लाया। इसके बाद उसने दोनों टुकड़े आपसमें जोड़ दिये, तो ऐसा मालूम हुआ मानों एलिनके पासवाला टुकड़ा इसीमेंसे फाड़ा गया हो। अब तो टिङ्कर यह समझ गया कि यह खासा इशारा है। दूकानदारका कोई परिचित मनुष्य उसको यह टुकड़ा दे गया, और कह गया होगा कि जो कोई इसके मेलका टुकड़ा दिखाये, उसे तुम मेरा आदमी समझना। चिट्ठी जाली हो सकती है, पर इस तरहका इशारा कोई कैसे समझेगा? घड़ीभर बाद दूकान-दारने कहा—"अच्छी बात है, पर वे तो अब इस शहरमें नहीं रहे, अन्यत्र चले गये हैं। कहां गये हैं, यह मैं अभी बतलाता हूं।"

यह कह, उसने एक कागजके टुकड़ेपर न जाने क्या पॅसिलसे लिखकर दे दिया और कहा—"बस, वे वहीं गये हैं।"

पलिन—"तो मैं वहा कैसे पहुचूंगी?"

दूकानदार—"मोटर भाड़ेपर ले लीजिये। पहाड़के पास उतरकर ऊपर चढ़ना पड़ेगा।"

पलिन—"क्या तुम मुझे पहुचा दे सकते हो?"

दूकानदार—"मैं दूकान छोड़कर कहीं नहीं जा सकता। आप भाड़ेकी मोटर ले लीजिये।"

टिङ्कर समझ गया कि पलिन मिचेल और डेयरकी तलाशमें है। अब या तो मुझे दूकानदारका बतलाया हुआ पता मालूम कर लेना चाहिये या इस औरतके पीछे पीछे चले जाना चाहिये। उसके साथ मोटरवालेने जैसी रुखाई दिखाई थी, उससे पलिनके पीछे मोटर दौड़ाना तो बड़ा ही कठिन मालूम होता था, इसलिये उसने सोचा कि अब अनुचित-उचितका विचार छोड़कर ही काम करना ठीक है। यह बात मनमें आते ही वह उस मोटरके पास पहुचकर उसपर सवार हो गया। ड्राइवर गाड़ी खड़ी करके खाना खाने चला गया था, इसलिये उसे मोटर हांक ले जानेका मौका मिल गया। उसने अपनी टोपी आपसे नीचेतक करके चश्मा पहन लिया और इस तरह अपना छद्मवेश बना लिया। उक्त दूकानके पास पहुचते ही उसने पलिनको बाहर निकलते देख अमेरिकनोंकी-सी आवाज बनाकर पूछा—"क्या गाड़ी चाहिये?"

उसने पूछा तो सही, पर उसे डर लग रहा था कि कहीं यह मुझे पहचान न ले और कहीं मोटरवाला आकर बखेड़ा न करने लगे। कुछ देरतक उसकी ओर देखनेके बाद एलिनने कहा—"हां, ले चलो।" यह कह वह मोटरपर सवार हो गयी, टिङ्कर मोटर दौड़ा ले चला। रास्ते-भर एलिनने उससे कुछ नहीं कहा, वह अपने मनसे मोटर दौड़ाये जाता रहा। जब नदी पार कर चे, लोग पहाड़के पास पहुंचे, तब उसने रास्ता बतलाया। वह फिर मोटर हांकने लगा, पर एलिनने एक बार भी उस जगहका नाम नहीं लिया, जिसका पता लिखकर दूकानदारने दिया था। जाते जाते गाड़ी एक जङ्गलकी-सी झाड़ीमें पहुंची। वहा पहुंचकर एलिनने इञ्जिनको झटपट जाम कर दिया। गाड़ी रुक गयी। एलिनने कहा—"टिङ्कर! होशियार हो जाओ।"

टिङ्करके तो देवता दमसे कूच कर गये। एलिनने कहा—"तुम अभी निरे छोकरे हो। उस्तादोंसे बाजी नहीं मार सकते। मुफ्तमें बेचारे बङ्केकका रुपया बरबाद कर रहे हो। तुमने क्या सोच रखा था कि मैं तुम्हें नहीं पहचानूंगी?" मैं तो तुम्हारी पोशाक ही देखकर समझ गयी थी कि यह आदमी एलेनटाउनका रहनेवाला नहीं है।"

टिङ्कर—"फिर तुमने मेरी गाड़ीपर सवारी क्यों की?"

एलिन—"तुम मेरे साथ-साथ उस जगहतक पहुंचना चाहते थे, जिसका पता हम तुम्हें हरगिज नहीं लगने दे सकते। अगर मैं दूसरी गाड़ीपर आती, तो तुम इस गाड़ीपर सवार होकर

मेरा पीछा करते, इसलिये मैंने तुम्हें अपनी मुट्ठीमें कर लेना ही ठीक समझा। कहो, कैसा छकाया?" यह कह उसने झटपट टिङ्करकी जेबमें हाथ डालकर उसकी पिस्तौल निकाल ली। इसके बाद उसने उसका मनीबेग और घड़ी भी छीन ली। इसके बाद उसने कहा—"अब तुम्हारी जहां इच्छा हो, चले जाओ। अब मैंने तुम्हारे पर काट डाले।"

तदनन्तर वह उसी मोटरपर सवार हो चल पड़ी। टिङ्कर चुपचाप दांत पीसता हुआ ताकता रह गया। इस समय न तो उसके पास पैसा था, न हथियार। घड़ी छिन जानेसे ऐसी भी कोई चीज न रही, जिसे बेचकर वह अपना काम चलाता। अब वह क्योंकर न्यूयार्कमें अपने मालिकके पास पहुंचे, इसी चिन्ताके मारे उसका चित्त चञ्चल हो उठा। अन्तमें यही सोचकर उसने सन्तोष किया कि यह गाड़ी चोरीकी है, इसलिये इसका मालिक इसे जरूर गिरफ्तार कराये बिना न छोड़ेगा।

उसने सोचा—"अब मालूम हुआ कि मिचेलके मामलेमें पलिनका भी हाथ है। पहले तो मैं सोचता था कि यह भला आदमी है, पर जब ऐसे ऐसे लुच्चे-लफङ्गोंका उसने साथ किया है, तब उसके चरित्रका कोई मूल्य नहीं हो सकता। या तो यह स्याही सोरा किसी बदमाश दलका इशारा है या स्वयं मिचेल ही इन सब कामोंका कर्त्ता-धर्त्ता है। या तो ये बदमाश मिचेलके पीछे पड़े हैं या वह स्वयं इनको साथ लेकर कोई चाल चल रहा है। मालूम नहीं, यह मोना जेक्सन मिचेलकी हितैषिणी

है या दुश्मन। यह लाल केशों वाला शोल्टोवार कौन है? इसे तो इस यात्राके पहले मैंने कभी कहीं नहीं देखा। हो सकता है, कोई मिचेलसे भी अधिक धनवान् और प्रभावशाली पुरुष इस मामलेमें हो।"

इसी तरह सोचते-विचारते वह वस्तीकी खोजमें भटकता फिरा। दिन बीत गया। शाम हुई। उसने सोचा कि कहीं वस्ती मिल जाती तो अच्छा था, नहीं तो रातको जनमानवशून्य वनमें बड़ा कष्ट उठाना पड़ेगा। इसी तरह जाते-जाते उसे एक जगह एकाएक किसी औरतके रोनेकी आवाज सुनाई दी। सुनते ही वह ठिठककर खड़ा हो गया। उसने उसी आवाजकी सीधपर चलकर एक जगह एक मोटरके नीचे एक आदमीको दबा हुआ देखा। उसने ज्योंही उस आदमीको गाड़ीके नीचेसे निकालकर देखा, त्योंही उसकी दृष्टि सामने खड़ी हुई मोना जैक्सनपर पड़ी। एक ओर तो उसे उस आदमीको मरा जानकर खेद हुआ, दूसरी ओर मोना-जैक्सनको देखते ही वह आश्चर्यसे भर गया। उसने पहले सोचा कि मुझे देखकर यह भाग जायेगी, पर वह न भागी, उलटे उसीकी ओर अग्रसर होती हुई बोली—"अहा! बहुत दिनों बाद अंगरेजकी सूरत तो दिखाई दी! परदेशमें अपने देशके आदमीसे मुलाकात होनेपर कितनी खुशी होती है!"

टिङ्करने पूछा—"तुम लोग यहां कैसे आये और यह आदमी मरा कैसे?"

वह बोली—"गाड़ी उलटी है सही, पर यह आदमी उसके

पहले ही मरा है। किसी गुप्त शत्रु ने इस बेचारेको गोली मार दी थी।" यह कहती हुई वह रोने लगी। पाठकोंको बतलाना व्यर्थ है, कि वह लाश कप्तान येट्सकी थी। मोना जैक्सनने अपने उस एक मात्र सहायकको मरा देख रोते-रोते कहा—"टिङ्कर! मेरा एक मात्र मित्र संसारसे जाता रहा। अब मैं अपने विरुद्ध होनेवाले षड्यन्त्रको अकेले नहीं भेद कर सकती। मुझे तुम्हारे-जैसे एक सहायककी बड़ी आवश्यकता है। टिङ्कर! दुष्टोंने मेरे प्रेमीको मुझसे अलग कर दिया है। उससे अपना मतलब निकालकर वे किसी दिन उसकी जान ले लेंगे। वे बड़े दुष्ट हैं—घोर राक्षस—नर पिशाच हैं।"

टिङ्कर इस अद्भुत परिवर्तनको देखकर आश्चर्यमें पड़ गया। उसने उत्कण्ठा-पूर्वक पूछा—"तुम्हारे प्रेमीका नाम क्या है?"

मोना—"तुम्हें उनकी चिट्ठी उस दिन होटलमें मिली ही थी। तुम उनका नाम अच्छी तरह जानते हो।"

टिङ्कर—"अच्छा, तो क्या ए० डी० से मतलब आर्चे डेयर-से है? आर्चे ही तुम्हारा प्रेमी है?"

मोना—"नहीं, उनका नाम एलेन डेलाफील्ड है। आर्चे-डेयरसे मुझे कोई सरोकार नहीं है।"

टिङ्करने बड़ी घबराहटके साथ कहा—"अच्छा, तो फिर मिचेलके साथ कौन है?"

मोना—"इसमें बात कुछ ऐसी है, जिसे मैं तुमसे नहीं कह सकती।"

टिङ्कर निराशाके साथ अपना सिर खुजलाने लगा। उसे यह अद्भुत घटना घटती देख बड़ा आश्चर्य हो रहा था, कि जो मोना-जैक्सन पहले उससे भागी-भागी फिरती थी, वही इस समय उसकी ओर सहायता पानेके लिये दीन-भावसे देख रही है। यह क्या मामला है? भेदके अन्दर और भेद भरा मालूम होता है।

सातवां परिच्छेद।



गिरफ्तारी

जब सेक्सटन ब्लेकने टेलीफोनद्वारा धमकिया सुनकर टेलीफोनका चोंगा नीचे रख दिया, तब वे अपने कर्त्तव्यके विचारमें लग गये। उन्होंने सोचा—"इसमें कोई शक नहीं कि, थारके इशारेपर गुण्डोंका एक दल काम कर रहा है, जो मुझे यहासे हटा देना चाहता है। इस दलने न्यूयार्ककी पुलिससे मेल कर लिया है, इसी भरोसे मुझे इस प्रकार धमकी दी जा रही है। मैं पुलिसके अधिकारियोंसे मिलकर अपनी रक्षाका प्रबन्ध कर सकता हूं, पर मुझे इसमें भी सफलताकी कोई आशा नहीं दिखाई देती। इसका नतीजा यही होगा कि मैं कहीं चलने-फिरनेसे भी मजबूर हो जाऊंगा। इसलिये जहांतक जल्दी हो सके, मुझे न्यूयार्कमें खूब छिपकर रहनेका बन्दोबस्त करना चाहिये।"

यही सोचकर उन्होंने तुरन्त एक चिट्ठी लिखकर होटलवालेके हिसाबका रुपया उसीके लिफाफेमें रखकर मेजपर रख दी और अपना रुपया-पैसा, बन्दूक और बिजली बत्ती जेबमें रखे हुए रोशनी बुझाकर बाहर निकलनेकी राह देखने लगे। वे साधारण दरवाजेसे बाहर नहीं जाना चाहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनपर जरूर पहरा रखा गया होगा। पर एकाएक रातके समय छठी मंजिलपरसे सबकी आंखें बचाकर निकल जाना कोई खिलवाड नहीं था। लाचार वे खिडकी खोल टेलीफोनके मोटे तारको पकडकर झूलते हुए दूसरे मकानकी छतपर चले गये। इसके बाद वहां सीढियोंका सिलसिला देख वे धीरे धीरे नीचे उतरते हुए चुपचाप बाहर निकल आये। उस मकानके सभी लोग सोये हुए थे, इसलिये उन्हें भागनेमें बडी आसानी हुई। रास्तेमें आते ही वे एक जगह खडे होकर आहट लेने लगे कि कहीं कोई उनका पीछा तो नहीं कर रहा है। इसी समय उन्हें किसीके पैरोंकी आहट मिली। वे खडे हो गये। ज्योंही वह आदमी उनके पास पहुंचा, त्योंही वे उसे पीछेसे पकड पटककर उसकी छाती-पर चढ बैठे। उन्होंने बिजली बत्तीके सहारे देखा कि यह आदमी उनका अपरिचित है। उन्होंने उसकी जेबोंकी तलाशी लेकर उसकी बन्दूक छिन ली और उसकी जेबमें जो एक बन्द लि-फाफा पडा था, वह भी ले लिया। चिट्ठी अपनी जेबमें रखकर उन्होंने उसकी बन्दूक उसे लौटा दी। इसी समय उन्हें कुछ दूरपर रोशनी दिखाई दी। साथ ही किसीने कडककर पूछा—"कौन है? क्या हो रहा है?"

कुछ ही क्षणोंमें एक पुलिसका सिपाही उनके सामने आ खड़ा हुआ। ब्लेक नहीं समझ सके, कि यह भी चारका पालतू कुत्ता है या नहीं। वे झट उस आदमीको छोड़कर भाग चले। पुलिसवालेने उसी समय बड़े जोरसे सीटी बजायी। उसके जवाबमें चारों ओरसे सीटियां बज उठीं। ब्लेक तेजीसे भागते चले गये। उन्हें मालूम पड़ा, मानों बहुतसे लोग उनका पीछा कर रहे हैं। इसी समय उन्हें एक चहारदीवारीसे घिरा हुआ अहाता दिखाई दिया। वे झट उसकी दीवार पकड़कर उस पार पहुंच गये और वहा सडकपर एक मोटर खडी देख, उसीपर सवार हो चल दिये। थोडी दूर जानेपर उन्हें एक होटल दिखाई दिया। वे वहीं खानेके लिये उतर पड़े। वहा पूरी शान्ति थी, भीड-भाड़का नाम भी नहीं था। वे चुपचाप भोजन करते हुए वर्त्तमान अवस्थापर विचार करने लगे। उन्होंने सोचा—"मैं सेन्ट रेजिससे दूर आ पडा हूं, इसलिये टिङ्कर यदि वहा आयेगा, तो उसे बड़ी निराशा होगी। मालूम नहीं, उसने मोना-जैक्सनको पकड़ पाया या नहीं। जहांतक जल्द हो सके, वहातक टिङ्करको पास बुला लेना बहुत जरूरी है, पर यह काम कैसे हो? अगर मैं श्रोल्टोवारको गिरफ्तार कर सकूं, तो काम बन सकता है, पर अभीतक मुझे यही नहीं मालूम कि वह कहां रहता है। पुलिसके बड़े साहबके पास सहायताके लिये प्रार्थना करने जाना भी इस समय बेकार ही है। यहाके प्रसिद्ध जासूसोंसे मिलकर काम करनेमें भी कम कठिनाई नहीं है, क्योंकि हमारे दुश्मन जरूर इन

जासूसोंपर भी निगाह रखते होंगे। चाहे जो हो, मुझे अकेले ही कुल काम करना होगा। इसमें जानका खतरा जरूर है, पर करना ही पड़ेगा। पहले गुण्डोंके अड्डेका पता लगाना जरूरी है। इसके बिना वे गिरफ्तार नहीं किये जा सकते। अभी जो बन्द लिफाफा मिला है, उसपर जहाका पता लिखा है, वहीं चलकर ढूढना चाहिये।" यही सोचकर वे होटलका बिल चुकाकर उसी पतेपर चले।

वहा पहुचकर उन्होंने देखा कि एक बहुत बडा मकान है; जिसके दरवाजेपर बिजलीकी बत्तिया जगमगा रही हैं। सामने ही एक साइनबोर्ड लगा है, जिसपर लिखा है,—

"हेल्समैनका 'पारिज' !"

"यह हाजमेकी अचूक दवा है—पेटकी सभी बीमारियोंका एक इलाज है। हर दवाफरोशके यहा पाइयेगा।"

उन्होंने सोचा,—"यह साइनबोर्ड महज लोगोंको धोखा देनेके लिये है। जरूर बदमाशोंका अड्डा इसी जगह है।" उन्होंने सदर रास्तेसे भीतर जाकर भिन्न भिन्न कर्मचारियोंके आफिस देखे। इसी समय किसीके पैरोंकी आहट पाकर वे फिर दरवाजेके पास किवाडकी आडमें आ छिपे। एक आदमी चुपचाप उनकी बगलसे होकर भीतर चला गया। थोडी देरमें ब्लेकको गाने बजाने और कई जनोंके हंसनेकी आवाज सुनाई दी। वे जेबसे पिस्तौल निकालकर हाथमें लिये हुए आगे बढे। आगे बढकर उन्होंने एक बहुत बडी दालानमें गाना-बजाना होता पाया। कोई २० आदमी

वहां बैठे थे। दर्जनों नौजवान औरतें भी मौजूद थीं। मेजपर शराबकी बोतलें पड़ी थीं। यार लोग बड़े मजेसे शराब ढालते चले जाते थे। ब्लेकने उन्हें नशेमें मस्त देखकर चुपचाप एक जगह जाकर आसन जमाया। कुछ लोगोंने उन्हें कौतूहलके साथ देखा, पर कोई कुछ न बोला। एक नौकरने लाकर उनके सामने भी शराब रख दी, ब्लेक समझ गये कि यहां ऐसे ही छटे हुए बदमाश आते हैं जैसोंकी तलाशमें वे घूम रहे हैं। जब उनके जैसा अनजान आदमी भी यहां बेरोकटोक दाखिल हो सकता है तब रोजके आनेवालोंका क्या कहना है

इसी समय जो जोड़ा नाच रहा था, वह थककर नीचे बैठ गया। उस समय मि० ब्लेकने पहचाना कि नाचनेवाली वही लीला है, जिसने काटनवर्थ भवनमें उनपर सन्दूक तोडनेका जुर्म लगाया था। वे एक बार कांप गये। वे समझ गये कि मैं ठीक जगहपर आ पहुचा हूं। वे अपना हैट खूब झुकाकर पहने हुए थे, इसीलिये वह औरत उनकी ओर आश्चर्य-भरी दृष्टिसे देखने लगी। थोडी देर बाद वह चुपचाप उनकी मेजके पास आ खडी हुई। उनके तो रोंगटे खड़े हो गये। उन्होंने अपनी जेबमें हाथ डालकर देखा कि पिस्तौल ठीक-ठिकानेसे रखी है। ब्लेकने उसकी ओर देखातक नहीं। वे मन मारे बैठे रहे। बडी देरतक लीला उन्हें देखती रही। इसके बाद वह परदेकी ओर बढ़ी। इतनेमें एक आदमी उसका हाथ थामे हुए अपने साथ ले चला। थोडी ही देर बाद वे दोनों फिर नाचते हुए दिखाई दिये। ब्लेकने सोचा—"यद्यपि

इसने मुझे अभी पहचाना नहीं है, तथापि इसमें शक नहीं कि यह फिर मेरे पास आकर अपना सन्देह दूर करेगी। इसलिये अब यहा-से खिसक जाना ही ठीक है। इन बदमाशोंका अड्डा तो मुझे मालूम ही हो गया,अब जबतक ये शराबके नशेकी झोंकमें हैं,तब-तक इन्हें गिरफ्तार करा देना चाहिये। क्या हुआ यदि बार इनमें नहीं है? उसके सब साथी तो पकड़े जायेंगे! फिर वह अकेला क्या कर लेगा?"

यही सोचकर वे बाहर निकलनेकी चेष्टा करने लगे, पर उन्होंने देखा कि दो आदमी ऐन दरवाजेपर खड़े हैं। उनमेंसे एक वही सुफेदपोश था,जो उन्हें गिरफ्तार करनेके लिये पुलिसवालोंके साथ आया था और जिसने उन्हें अमेरिकासे भाग जानेकी सलाह दी थी। अब वे भागें तो कैसे? सोचते सोचते वे परदेकी आड़में चले गये। इसी समय उन्हें एक बन्द दरवाजेके भीतरसे कुछ आदमियोंके बोलनेकी आवाज सुनाई दी। वे कान लगाकर सुनने लगे। किसीने परिचित स्वरमे कहा—"बड़ी मुश्किलकी बात है। जितने काम करनेवाले हैं, वे सब के-सब हद दर्जेके बेवकूफ हैं। देखो न जेपसेनको, वह बार बार उल्लू बन जाता है।"

ब्लेकको यह समझने देर न लगी कि बोलनेवाला वही शो-स्टोवार है। उन्होंने सोचा कि अगर इसी समय इनपर धावा कर दिया जाये, तो बार पकड़ा जा सकता है।

एक दूसरेने कहा—"देखियेगा, मैं किस चतुराईसे काम

बनाता हूं। मेरा नाम मौरस नहीं, जो इस वार आपको अपनी करामात न दिखा दूं।" यह कह वह बाहर निकला और दरवाजा खोलकर एक तरफ जाने लगा। ब्लेकको मौका मिल गया वे भी खुले दरवाजेकी राह उसके पीछे हो लिये। कुछ दूर आगे बढ़ते ही उन्होंने दन्नसे पिस्तौल छोड़ी। गोली उसके पैरमें लगी। वह नीचे गिर पड़ा। ब्लेकने बिना एक मुहूर्तका विलम्ब किये झट उस कमरेका दरवाजा बाहरसे बन्द कर दिया, जिसमें बैठा बार बोल रहा था। इसके बाद उन्होंने एक अन्धेरे कमरेमें ले जाकर उस घायल और बेहोश मौरसको एक डेस्कके पीछे छिपा दिया। इसके बाद अपनी बिजली-बत्तीके सहारे उन्होंने मौरसकी तलाशी लेनी शुरू की। उसकी जेबमें दो रूमाल मिले। उन्होंने उन्हीं रूमालोंसे उसके हाथ बांध दिये। साथ ही अपना रूमाल उसके मुंहमें ठूंस दिया। इतना काम बडी फुर्तीसे करके वे बारके कमरेकी ओर चले। किवाड खोल, भीतर पहुंचकर उन्होंने पिस्तौल ताने हुए कहा—"बार! खबरदार। जहां तुमने शोर मचाया कि मैं झट गोली मार दूंगा।"

बारने हंसकर कहा—"क्यों मूर्खता कर रहे हो? अभी कोई-न-कोई आकर तुम्हारी सारी शेखी किरकिरी कर देगा।"

ब्लेकने कहा—"तुमने किसीको सहायताके लिये पुकारा नहीं, कि मैंने पिस्तौलसे तुम्हारी खोपडी चूर कर दी।"

बारने फिर कहा—"जाओ, यह भी कोई हंसी-खेल है!"

ब्लेकने पिस्तौलका निशाना साधे हुए बारके पास जाकर

उसकी जेबसे पिस्तौल निकाल ली और पूछा—"मिचेल कहां है ?"

थारने कहकहा लगाते हुए कहा—"क्या कहा ? मिचेल, वह कहाकी बला है ?"

ब्लेक—"तुम बखूबी जानते हो कि वह कौन है ।"

थार—"मैं मिचेल नामके किसी आदमीको नहीं जानता।"

इसी समय उनकी निगाह सामने मेजपर पड़ी हुई एक चिट्ठीपर पड़ी जो टाइपराइटरको छपी हुई थी। ब्लेकने उसे मांगकर पढ़ा। उसमें यह पता लिखा था—"पाइनसाइड, मौचटुपाके पास।" इसके नीचे यह मजमून दर्ज था,—

"इसके साथ एक कागज जाता है। उसका इशारा ओ० के० है। वह सब तरहसे सन्तुष्ट है। उसे शान्तिका स्थान मिल गया है। मैंने उसे शहरोंमें रहनेसे मना कर दिया है। खैर, आगेका हाल लिखना।" उस चिट्ठीपर कलकी तारीख थी, इसलिये मालूम हुआ कि अभी हाल ही यह चिट्ठी आयी है। उसपर भी आब्रे डेयरके दस्तखत थे। चिट्ठी पढ़ना खतम कर उन्होंने कहा—"अच्छा, इस चिट्ठीके साथ कौनसा कागज था, दिखाओ।'

थारने एक काले रङ्गका स्याही सोखका टुकड़ा उनकी ओर बढ़ा दिया। वे अकचकाकर सोचने लगे—"इस काले स्याही-सोखका क्या भेद है ?"

ब्लेकने पूछा—"यह क्या है ?"

पर बारके इसका जवाब देनेके पहले ही किसीने बाहरसे दरवाजा खटखटाया। ब्लेकने उसकी खोपड़ीपर निशाना साधे हुए कहा—"चुप रहो।"

बाहरसे लीलाने पुकारा—"क्यों मि० बार! बोलते क्यों नहीं?"

ब्लेकने धीरेसे कहा—"कह दो, कि मुझे अभी मिलनेको फुरसत नहीं है।" बार चुप रहा। बाहर लीलाने किसीसे कहा—"मैंने उसे इधर ही आते देखा है।" इसके बाद उन लोगोंने किवाड़ खोलनेके लिये बड़ा जोर लगाया, पर भीतरसे बन्द होनेके कारण किवाड़ नहीं खुले। थोड़ी देर बाद बहुतसे आदमी दरवाजेके पास जमा हो आये और कुल्हाड़ीसे किवाड़ तोड़नेकी कोशिश करने लगे। बार यद्यपि चुप था, तथापि उसकी आखोंपर भावी विजयकी आशासे प्रसन्नताकी ज्योति छा गयी। ब्लेकने पिस्तौलका निशाना बारके ऊपर साधे ही हुए खिड़कीके पास जाकर निकल भागनेका रास्ता देखना शुरू किया। उन्हें खिड़कीके नीचे अंधेरा मैदान-सा मालूम पड़ा। उन्होंने सोचा—"बस, इसी राहसे भाग निकलना चाहिये।"

वे जबतक नीचे झांककर देखने लगे, तबतक बारको मौका मिल गया। वह उनके निशानेसे अपनेको बचाकर मेजके नीचे चला गया और बड़े जोरसे चिल्लाया—"दरवाजा तोड़ डालो। ब्लेक यहीं है!"

ब्लेकने यह देखकर पिस्तौल छोड़ी; पर वह मेज बारके

लिये ढाल बन गयी। उन्होंने तीन बार फायर की, पर वह तीनों दफे बच गया। अबके उसने ब्लेकपर झपट्टा मारा और झट उनको नीचे गिराकर ऊपर चढ़ बैठा। वे पूरे जोरके साथ अपनेको छुड़ानेको कोशिश करने लगे। उन्होंने किसी तरह अपने हाथकी पिस्तौल छोड़नेका मौका पाकर गोली दागी, पर शिकञ्जमें पड़े होनेके कारण उनका वार खाली गया। उधर बाहरसे किवाड़ तोड़नेकी कोशिश हो रही थी, इधर ब्लेक और बारमें मल्ल-युद्ध हो रहा था। ब्लेकने देखा कि उनके शत्रुमें दानवोंकासा बल है। ब्लेकने चेष्टा करते-करते एक बार सारे शरीरका जोर लगाकर बारको उलट देना चाहा, पर वे वैसा न कर सके। हां, जरा-सा मौका पाकर उन्होंने बारके सिरके बाल पकड़ लिये और जोरसे खींचने शुरू किये। उसको बाल उखड़ते हुए मालूम पड़ने लगे। बार बेचैन हो उठा। उसने घबराकर उन्हें छोड़ दिया। ब्लेकने उसी मेजके नीचे बारको दबा दिया। ठीक इसी समय किवाड़के पल्ले टूटकर गिर पड़े और एक साथ ही बहुतसे आदमी वहां आ पहुंचे। ब्लेकने अपनी पिस्तौल सीधी की। साथ ही बिना विलम्ब किये वे खिड़कीपर चढ़ गये और वहांसे दाय-दाय फायर करते हुए नीचे कूद पड़े। उनके पीछे पीछे उनके शत्रु भी नीचे उतरे। ब्लेकने देखा, कि यह मैदान नहीं, बल्कि इस मकानसे सटा हुआ नजर-बाग है। उन्होंने शत्रुओंसे बचनेके लिये उसके बाहर निकलना चाहा, पर कहीं रास्ता नहीं देता था। लाचार वे चहारदीवारीपर चढ़कर नीचे कूद

उधर नदी थी। नदीमें एक नाव लङ्गर डाले पड़ी थी। उन्होंने सोचा कहीं इस नावपर पुलिसवाले तो नहीं हैं? इसीलिये वे उस ओरसे बचते हुए अन्धेरेमें एक पेडके पीछे जा छिपे। उनके शत्रु उन्हें ढूंढ़ते हुए बहुत दूर निकल गये। एक उनके पास ही रहा। ब्लेक वहीं छिपे रहे। साथ ही उन्होंने वारकी जो पिस्तौल छीनी थी, उसे खूब जोरसे अपने हाथमें थामे रहे। वह आदमी ज्योंही उनके पास आया त्योंही उन्होंने बडे जोरसे एक घूंसा उसकी नाकपर मारा, जिससे वह बेचैन होकर नीचे गिर पडा।

उसे छोड़कर वे घूमते हुए उस मकानके बाहरवाले हिस्से-पर पहुचे,जहा साइनबोर्ड लगा हुआ था। रातके अधेरेमें उस साइनबोर्डकी बिजली-बत्तिया चमक रही थीं। उन्होंने सोचा कि अभी यहासे चला जाऊंगा तो ये सब भी यह मकान खाली करके भाग जायेंगे, इसलिये इन्हें तबतक यहीं अटकाये रखना चाहिये, जबतक पुलिसवाले नहीं आ जाते। यही सोचकर वे फिर अन्दर घुस पडे। इसी समय वार उनके सामने आकर बोला—"क्यों मुफ्तमें हैरानी उठाते हो? हमलोग तुम्हें बहुत तङ्ग करेंगे,नहीं तो चुपचाप चले जाओ।"

वह इतना ही कहने पाया था,कि बहुत सी मोटरें एकाएक वहां आ पहुचीं। वार भागनेकी राह ढूंढ़ने लगा। ब्लेकने उसका मतलब समझकर उसे पीछेसे जाकर पकड लिया। वह बड़ा बलवान था, अपनेको छुडाकर तुरन्त निकल भागा। ब्लेकने उसका पीछा करना शुरू किया। उन्होंने तुरन्त ही फिर

उसे पकड़ लिया। इस बार बारने फिर बड़ा जोर लगाया और अपनी जान बचाकर भागा। इधर नाच-घरमें भी भगदड़ मच गयी। नाचनेवाली स्त्रियाँ भागने लगीं। पुलिसवाले भीतर घुसकर दायें बायें फायर करने लगे। ब्लेकने देखा, कि भागने वालोंने तमाम बिजली बत्तियां बुझाकर अंधेरा कर दिया है। अन्धकारमें बार ब्लेककी नजरोंसे बाहर हो गया। ब्लेकने सौभाग्यवश बिजलीकी चाबीका बोर्ड देख लिया और झट फिर सब जगह रोशनी कर दी। पुलिसवालोंने कितनोंको पकड़ लिया था। पकके हाथमें पड़ी हुई लीला छटपटा रही थी। पर बारका कहीं पता नहीं था।

ब्लेकने उसी समय पुलिसके प्रधान कर्मचारीके पास जाकर अपना परिचय देते हुए पासपोर्ट दिखलाया। पुलिसवालोंने अपने असामियोंके हथकड़ी डाल दी और बारकी खोजमें सारा मकान छान डाला, पर कहीं उसका पता न चला। इसके बाद अमेरिकाकी पुलिसकी शिकायत करते हुए ब्लेकने कहा—"पुलिस-वाले इन बदमाशोंसे मिले हुए हैं, इसीलिये उनकी हिम्मत ऐसी बढ़ गयी है।"

पुलिसके प्रधान कर्मचारीने कहा—"आपका कहना ठीक है। जरूर ही बारको किसी प्रधान राजनीतिक पुरुषकी सहायता प्राप्त है, तभी वह यों स्वच्छन्द चक्र चला रहा है। अन्तमें पकड़े हुए असामियोंसे पूछ-पाछ होने लगी, पर वे बारके विषयमें एक शब्द भी न बतला सके। उन्हें लिये हुए पुलिसवाले चले गये। ब्लेकने अपनी राह ली।

आठवां परिच्छेद



गुप्त बंगला

पुलिसवालोंका साथ छोड़कर मि० ब्लेक हार्डमैनके होटलमें चले आये। वहीं आर्टरसे उनकी मुलाकात हुई। बातों-बातोंमें उसने कहा—"आजकल बाजारकी हालत दिन-दिन बिगड़ती चली जा रही है। कुछ गजबके फाटकेबाज यहां भी आ पहुंचे हैं। देखा चाहिये, ये कितने घर घालते हैं!"

ब्लेक समझ गये कि यहां भी मिचेलने अपने पर फैलाये। ब्लेकने पूछा—"यह किसकी कारवाई है?"

आर्टरने कहा—"फेलिक्स लेण्डर-एण्ड कम्पनीकी। उसीके आदमी बाजारको बिगाड़ रहे हैं।"

ब्लेक—"अच्छा, इस कम्पनीका सरोकार लण्डनके मारिस-लेण्डरसे तो नहीं है?"

आर्टर—"हां, हां, वही, वही इस चक्रको चला रहा है।"

इसके बाद वे सेन्ट-रेजिसमें टिङ्करको खोजते हुए पहुंचे। टिङ्कर पहुंच गया था। उसने अपनी रामकहानी सुनाते हुए कहा—"देखिये, मोना-जैक्सन अब हमारे विरुद्ध नहीं होगी। यद्यपि उसने अपना भेद मुझे नहीं बतलाया, तथापि उसने सहायताका वचन दिया है। इस बार तो उसीने मुझे अपने खर्चेसे यहांतक भेजा है, नहीं तो मैं तो कौड़ी-कौड़ीका मुहताज हो गया था।"

ब्लेक—"अच्छा, तुम दोनों मौचङ्क स्टेशनपर पहुंच जाओ। मैं अभी आता हूं। जरा करोड़पतियोंसे मिलना है, इसलिये अपना ठाट भी वैसा ही बना लूं।"

थोड़ी देर बाद अच्छी तरह बन-ठनकर वे मौचङ्क-स्टेशनपर पहुंचे। वहां मोना जेक्सन और टिङ्कर पहलेसे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

युवतीकी ओर देखते ही उन्होंने पूछा—"क्या यही मिस-जेक्सन हैं?" टिङ्करने हां किया। इसके बाद वे लोग एक होटल-में चले। वहां एक अकेले कमरेमें बैठकर ब्लेकने उस युवतीसे पूछा—"तुम्हारे और मिचेलके इन भेद भरे कामोंका रहस्य मेरी समझमें नहीं आता।"

मोना—"मैं मिचेलके बारेमें कुछ भी नहीं जानती। मैं एक दूसरे ही मतलबसे यहां आयी हूं।"

ब्लेक—"वह मतलब क्या है?"

मोना—"मेरा प्रेमी न जाने कहां गुम हो गया है। मैं उसी-को ढूंढती फिरती हूं।"

ब्लेक—"पर तुम्हारी यात्राका ढङ्ग बड़ा ही विचित्र है। जब तुम इसीलिये यहां आयी हो, तब तुम्हें इतना लुक-छिपकर सफर करनेका क्या काम था?"

मोना—"इसी डरके मारे कि कहीं मेरी यात्राका हाल मेरे शत्रुओंको न मालूम हो जाये और वे मेरे प्रेमीको दुःख देने लगें।"

ब्लेक—"खैर, मिहरबानी करके यह तो बतलाओ कि तुम्हारे प्रेमीका नाम क्या है और उसे किन लोगोंसे भय है?"

बड़ी देरतक चुप रहनेके बाद मोना-जैक्सनने कहा—"मैं आपके इन प्रश्नोंका उत्तर नहीं दे सकती।"

ब्लेक—"क्यों?"

मोना—"कारण मैं अभीतक आप ही नहीं जानती कि मेरा प्रेमी कौन है।"

ब्लेक—"क्या खूब! जानती भी नहीं और खोजती भी फिरती हो।"

मोना—"मैं ठीक ही कह रही हूं। उसने मुझे अपना नाम एलेन डेलाफील्ड बतलाया था, पर अब मुझे सन्देह होता है कि यह उसका असली नाम नहीं है।"

ब्लेक—"इस सन्देहका कोई कारण भी है?"

मोना—"मेरे पास उसका भेजा हुआ एक पत्र मिला है, जो टाइपराइटरका छपा हुआ है। मैंने उसी मशीनके छपे हुए और पत्र भी देखे हैं, जो किसी औरकी तरफसे लिखे गये हैं। एलेनने मेरे पास लिखा था कि मैं बड़ी जल्दीमें अमेरिका जा रहा हूं, पर उसने इसका कोई कारण मुझे नहीं बतलाया। उसके सिवा अन्य जो पत्र मेरे देखनेमें आये हैं, उन्हें देखकर मुझे ऐसा मालूम होता है कि इन पत्रोंके लेखकके साथ ही एलेन अमेरिका आया है।"

ब्लेक—"इससे तुम्हें इस बातका सन्देह क्यों हुआ कि एलेनकी जान खतरेमें है?"

मोना—"मुझे उसके साथीपर सन्देह हो रहा है।"

ब्लेक—"जिस मशीनपर ये पत्र छापे गये हैं, उसका मालिक डेयर है। वह भी अमेरिका ही आया है।"

मोना—(होंठ काटते हुए) "पर डेयर यहा नहीं है। वह न्यूज़ीलैण्ड चला गया।"

ब्लेक—"डेयर तो मिचेलके साथ ही आया है। वह पास ही पाइनसाइड नामक स्थानमें ठहरा है। अगर उसके साथ डेयर नहीं है, तो दूसरा कौन है? पलेन डेलाफील्डका इस मामलेमें क्या हाथ है?"

मोना—"यही तो मैं भी जानना चाहती हूं।"

सिगरेट जलाकर पीते हुए ब्लेकने कहा—"देखो, मिस! अगर तुम हमारी सहायता लिया चाहती हो, तो मुझसे कोई बात मत छिपाओ, तुम्हें जरूर मिचेलके विषयमें कुछ मालूम है। शेयर बाजार और फाटकेके बाजारकी जो अन्धा-धुन्ध जारी है, उसके विषयमें भी तुम्हें बहुत कुछ मालूम है। तुम झूठ मूठ बहाना मत करो कि कुछ भी नहीं जानतीं। सेलफिरिज होटलमें तुम्हारी मौरिस लेण्डरसे मुलाकात हुई थी। वही तो मिचेलकी ओरसे लन्दनके बाजारमें सौदा करता है। मौरिस लेण्डरसे तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? डेलाफील्ड और मिचेलसे क्या सरोकार है? मिचेल डेयरको अमेरिका क्यों नहीं ले आया?"

मोनाने हाथ मलते हुए कहा—"मैं आपसे यह सब बातें नहीं बतला सकती।"

ब्लेक—"तब डेलाफील्डके विषयमें मैं भी तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर सकूंगा।"

मोनाने पछताते हुए कहा,—"मालूम नहीं, डेलाफील्ड मिचेल-के साथ क्या कर रहा है, पर इतना मैं जरूर समझती हू कि यदि वह मिचेलके साथ है, तो खतरेसे खाली नहीं है। मिचेलके चारों ओर खतरा है। कुछ सोच-समझकर ही उसने डेयरको न्यूजी-लैण्ड भेजा होगा। मुझे इसका कोई कारण मालूम नहीं।"

ब्लेक—"और मौरिस लेण्डर कौन है?"

मोना—"मेरा सौतेला बाप है।"

ब्लेक—"यें?"

मोना—"मैं बिलकुल सच कह रही हू।"

ब्लेक—"मैं तुम्हारी बातका विश्वास करता हू'। अच्छा, तो क्या तुम्हारे पास डेलाफील्डका कोई फोटो है?"

मोना-जैक्सनने सिर-हिलाकर हामी भरी और अपने गलेके हारमें लटकता हुआ एक 'लाकेट' निकालकर उन्हें दिखलाया, जिसमें उसके प्रेमीका फोटो था। ब्लेकने भलीभांति परीक्षा करके उस फोटोको देखा। इसके बाद उन्होंने पूछा—"मेरे सह-कारीने पहले-पहल तुम्हें जिस मकानमें देखा था, वह कहांपर है? तुमने उसे गलत पता क्यों बतला दिया था?"

मोना—"मैं खुद ही उस मकानमें दो दिनोंसे पहुची हुई थी, इसलिये मुझे उसका पूरा पता नहीं मालूम था। दूसरे, मैं किसी औरकी ही बाट जोह रही थी, कि इसी समय मि० टिङ्कर आ पहुचे। इसलिये मैं उन्हें अपना पूरा परिचय देना नहीं चाहती थी।"

ब्लेक—"अच्छा सुनो, मैं तुम्हारा सारा हाल जान गया हू।

तुम उस दिन आप-डेयरकी ही राह देख रही थी, पर जब उसकी जगह टिङ्कर पहुंच गया, तब तुम्हें बड़ा अफसोस हुआ। तुम जानती थीं, कि डेयर न्यूजीलैण्ड जानेवाला है। क्यों है न यही बात? अच्छा, यदि तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारी कुछ सहायता करू, तो मुझसे सारा हाल सच-सच कह सुनाओ।"

मोना—"मेरे सौतेले बापने ही उस मकानमें मेरे लिये कमरा भाड़ेपर लिया था और मुझे खर्च-वर्चके लिये रुपये दिये थे। मैं उस दिन एक नाचमें शामिल होने आ रही थी, पर मारे कुहासेके बाहर न जा सकी। मैं डेयरको मना करनेवाली थी। उसका फोटो भी वे लोग उड़ा ले गये थे।"

ब्लेक—"डेयरको उन लोगोंने कैसे मुट्ठीमें किया?"

मोना—"उसका कुछ रुपया राहमें गिर पड़ा था। वही किसीने पाया और उसको टेलीफोन किया कि आकर ले जाओ, पर मैं समझ रही थी कि उसके लिये यह जाल बिछाया जा रहा है।"

ब्लेक—"वे लोग कौन थे?"

मोना—"मैं नहीं कह सकती। शायद वे लोग मेरे सौतेले बापके परिचित थे।"

ब्लेक—"अच्छा, तो तुम्हारे सौतेले बाप मिचेलकी ओरसे काम कर रहे थे?"

मोना—"हो सकता है।"

ब्लेक—"अच्छी बात है। चलो, तुम मेरे साथ पार्कसाइड

तक चलो। मैं तुम्हारे ब्लेन डेलाफील्डको ढूंढ़े निकालता हूं।"

यह कह वे वहांसे उठे और नौकरसे एक मोटर ले आनेको कह आये। इसके बाद उन्होंने मोना-जैक्सनसे कहा—"देखो, टिङ्करने यह काला स्याही-सोख पहले दिन तुम्हारी मेजपर पड़ा पाया था। इसके बाद ऐसा ही कागज उस दिन जहाजपर भी मिला, जिस दिन तुमने टिङ्करको छकाया था। इसका क्या रहस्य है?"

स्याही-सोख हाथमें लेकर मोना बोली—"मैं इसके सिवा और कुछ नहीं जानती कि इसका रहस्य मि० मिचेलको ही मालूम है। मैंने इसे जहाजपर नहीं गिराया था। हो सकता है, यह उसी लाल बालोंवालेका काम हो जिसने आपके सहकारीको पकड़ा था।"

ब्लेक—"कौन? बार तो नहीं? मालूम होता है, कि वह तुम्हारा पीछा कर रहा है। वह मिचेलका दोस्त मालूम होता है।"

मोना—"सम्भव है। मुझे तो मिचेल पक्का शैतान मालूम होता है।"

ब्लेक—"जरूर, पर वह अपनेको पागल बतलाता फिरता है। खैर, देखा जायेगा।"

इसी समय दरवाजेपर मोटर आ गयी, खबर पाते ही मि० ब्लेक और टिङ्कर मोना-जैक्सनके साथ उसपर जा सवार हुए। मि० ब्लेकने देखा कि यह लड़की पूरी बातें नहीं बतलाती और

हमारा साथ देनेके लिये महज एलेन डेलाफोर्टके खयालसे ही तैयार हुई है। टिङ्कर न जाने क्यों उसका रत्तीभर भी विश्वास करना नहीं चाहता था। वह बार-बार मि० ब्लेकको इस बातकी सूचना देना चाहता था कि यह औरत मक्कारा है, पर उसे मौका नहीं मिला।

पाइनलाइडके पास एक झाड़ीके निकट पहुंचकर उन्होंने मोटर रोक दी और कहा—"मोना! अब तुम शीघ्र ही अपने प्रेमीको देख सकोगी।" इसके बाद उन्होंने टिङ्कर और मोनाको अपने पीछे-पीछे आनेका इशारा दिया। आगे आगे ब्लेक, बीचमें मोना और पीछे पीछे टिङ्कर चले।

आध घंटेतक जङ्गली रास्ता तै करनेके बाद वे लोग एक मनोहर पहाड़ी झीलके पास पहुंच गये, जिसके किनारेपर एक खूबसूरत बगला था। धीरे-धीरे वे लोग उसके बहुत करीब आ गये। इसी समय उस पहाड़ी बगलेपर एक प्रकारकी रोशनी दिखाई दी। साथ ही किसीके बड़े जोरसे चीखनेकी आवाज भी कानोंमें पड़ी। मोना-जैक्सन यह चीख सुनते ही बड़े जोरसे चिल्लाया चाहती थी, पर मि० ब्लेकने उसके मुहपर हाथ रखकर उसे चुप करा दिया। इसी समय उस झीलमें एक नाव आती दिखाई पड़ी। वे तीनों एक झाड़ीमें छिपकर आहट लेने लगे। इसी समय एक आदमी नावको किनारे लगा कर जङ्गलके भीतर चला गया। ब्लेकने उसी नावपर चढ़कर उस पार बने हुए बंगलेमें पहुंचनेका इरादा किया। वे चुपचाप नाव खेते हुए

उस पार पहुच गये। मि० ब्लेकने अपनी पिस्तौल सम्हाली और अपने साथियोंको अपने पीछे आनेका इशारा करते हुए उस बंगलेके बन्द दरवाजेपर धक्का मारकर भीतर घुस पड़े। इसी समय किसीने बड़े जोरसे कड़क कर पूछा—"कौन है?"

नवां परिच्छेद

उलझनोंकी गुत्थी

ब्लेक अपनी पिस्तौल सम्हाले हुए उस बंगलेकी बीचवाली बड़ीसी दालानमें पहुच गये। वहा एक बड़ा ही हट्टाकट्टा जवान बैठा हुआ था। उसने बड़ी रोबीली आवाजमें पूछा—"तू कौन है?"

मि० ब्लेकने हेट उतारकर सलाम करते हुए कहा—"सलाम मि० मिचेल! कहिये, मिजाज अच्छे हैं?"

उस आदमीने कहा—"मिचेल! कौन मिचेल? कहाका मिचेल? आदमी हो या पतलून? मेरा नाम मिचेल थोड़े ही है? तुम भी अजीब खोपड़ीके जीव हो।"

मि० ब्लेक—"अच्छा, तो अब आप ही बतलाइये कि आपका नाम क्या है?"

मुझे तो लोग आब्रे डेयर कहते हैं।" यह बात कानमें पड़ते ही मोना जैक्सन जो थोड़ी दूरपर खड़ी थी, दौड़ी हुई वहा चली आयी और बोली—"प्लेन ? तुम्हीं हो ?"

वह आदमी भी अचरजमें आकर घबराहटके साथ बोल उठा—"अरे, मोना ! तुम यहां कैसे चली आयीं ? इन लोगोंकी सङ्गत तुम्हें कैसे मिली ?" मोनाने उसके पास जाकर धीरे-धीरे उसके कानमें न जाने क्या कहा। इधर टिङ्करके मनमें नये आश्चर्यका आविर्भाव हुआ। उसने सोचा,—"इस आदमीका चेहरा डेयरके फोटोसे नहीं मिलता, इसलिये इसका अपनेको डेयर बतलाना सरासर झूठ है। और अगर यही प्लेन है, तो फिर न्यूजीलैण्ड कौन गया ?"

थोड़ी देर बाद मि० ब्लेकने कहा—"मि० मिचेल ! मैं देखता हूं, कि आपने बहुतसे उपनाम रख लिये हैं।"

मोना अकचकाकर चिल्ला उठी—"मिचेल ? आप क्या कहते हैं ?"

उस आदमीने कहा,—"मैं आपसे कह चुका कि मेरा नाम मिचेल नहीं है।"

इसी समय मि० ब्लेकने अपनी जेबसे एक लिफाफा निकालकर उस आदमीके हाथमें देते हुए कहा—"मैं लण्डनसे तुम्हारी ही खोजमें चला हूं। मेरे पास तुम्हारा फोटो मौजूद है, इसलिये बहानेबाजी मत करो। तुम्हारे लिये यह बहुत जरूरी है कि तुम अपने सेक्रेटरी चैम्पियन और अपने रिश्तेदारोंको अपना

उस पार पहुच गये। मि० ब्लेकने अपनी पिस्तौल सम्हाली और अपने साथियोंको अपने पीछे आनेका इशारा करते हुए उस बगलेके बन्द दरवाजेपर धक्का मारकर भीतर घुस पडे। इसी समय किसीने बडे जोरसे कडक कर पूछा—"कौन है?"

नवां परिच्छेद

उलझनोंकी गुत्थी

ब्लेक अपनी पिस्तौल सम्हाले हुए उस बंगलेकी बीचवाली बडीसी दालानमें पहुच गये। वहा एक बडा ही हट्टाकट्टा जवान बैठा हुआ था। उसने बड़ी रोबीली आवाजमें पूछा—"तू कौन है?"

मि० ब्लेकने हैट उतारकर सलाम करते हुए कहा—"सलाम मि० मिचेल! कहिये, मिजाज अच्छे हैं?"

उस आदमीने कहा—"मिचेल! कौन मिचेल? कहाका मिचेल? आदमी हो या पतलून? मेरा नाम मिचेल थोडे ही है? तुम भी अजीब खोपडीके जीव हो।"

मि० ब्लेक—"अच्छा, तो अब आप ही बतलाइये कि आपका नाम क्या है?"



मुझे तो लोग आत्रे डेयर कहते हैं।" यह वात कानमें पडते ही मोना-जैक्सन जो थोडी दूरपर खडी थी, दौडी हुई वहा चली आयी और बोली—"प्लेन ? तुम्हीं हो ?"

वह आदमी भी अचरजमें आकर घवराहटके साथ बोल उठा —"अरे, मोना ? तुम यहा कैसे चली आयीं ? इन लोगोंकी सङ्गत तुम्हें कैसे मिली ?" मोनाने उसके पास जाकर धीरे-धीरे उसके कानमें न जाने क्या कहा। इधर टिङ्करके मनमें नये आश्चर्यका आविर्भाव हुआ। उसने सोचा,—"इस आदमीका चेहरा डेयरके फोटोसे नहीं मिलता, इसलिये इसका अपनेको डेयर बतलाना सरासर झूठ है। और अगर यही प्लेन है, तो फिर न्यूजीलैण्ड कौन गया ?"

थोडी देर बाद मि० ब्लेकने कहा—"मि० मिचेल! मैं देखता हू, कि आपने बहुतसे उपनाम रख लिये हैं।"

मोना अकचकाकर चिल्ला उठी—"मिचेल ? आप क्या कहते हैं ?"

उस आदमीने कहा,—"मैं आपसे कह चुका कि मेरा नाम मिचेल नहीं है।"

इसी समय मि० ब्लेकने अपनी जेबसे एक लिफाफा निकालकर उस आदमीके हाथमें देते हुए कहा—"मैं लण्डनसे तुम्हारी ही खोजमें चला हू। मेरे पास तुम्हारा फोटो मौजूद है, इसलिये बहानेबाजी मत करो। तुम्हारे लिये यह बहुत जरूरी है कि तुम अपने सेक्रेटरी चैम्पियन और अपने रिश्तेदारोंको अपना

पता-ठिकाना बतला दो।" यह कह उन्होंने वह बन्द लिफाफा उस आदमीके हाथमें दे दिया। उसने पूरी चिट्ठी पढ़कर अपनी जेबमें रख ली और ब्लेककी ओर देखते हुए कहा—"ख़ैर, अब छिपानेसे कोई लाभ नहीं है। सचमुच मैं ही मिचेल हूं, पर मामला कुछ मेरी समझमें नहीं आता। मेरा बूढ़ा चाचा लिखता है कि मैं पागल हो गया हूं। अपनी दौलत ख़राब कर रहा हूं, यह सब क्या माजरा है?"

मि० ब्लेक—"तुम्हारे चाचाके कहनेका मतलब यह है कि तुमने जो अपने सब शेयर अन्धाधुन्ध जैसे-तैसे भावमें बेच डाले उससे—"

मिचेलने चौंककर कहा—"मैंने अपने शेयर नहीं बेचे।" ब्लेक मुस्कुरा दिये। बोले—"तुमने भले ही नहीं बेचे हों, पर वे बिक गये। इसीसे मैं कहता हूं कि अब अपने घरवालोंके साथ पूरा सम्बन्ध स्थापित कर लो, नहीं तो चौपट हो जाओगे। शीघ्र घर लौट जाओ।"

मिचेलने कहा—"मालूम होता है कि कोई मेरे सेक्रेटरीको उल्लू बना रहा है, इसलिये अब तो मुझे जरूर ही लौटना पड़ेगा। उस बुड्ढे कम्बख्त डाक्टर ग्रेवसने मुझसे झूठमूठ कह दिया कि मेरा स्वास्थ्य नष्ट हो रहा है, पर मैं देखता हूं कि मैं पूरा हट्टाकट्टा हूं। (कुछ ठहरकर) ख़ैर, यह तो कहिये, कहीं आप भी मेरे साथ कोई चाल तो नहीं चल रहे हैं?"

ब्लेक—"हरगिज़ नहीं।"

मोना—"बिलकुल ठीक है, ब्लेन!"

मिचेल—"अच्छा, तो मैं कल ही यहासे रवाना हूंगा।"

ब्लेक—"नहीं, अगर तुम जीते जी लण्डन पहुचना चाहते हो तो अभी चलो। गिलवर्ट हेल और शोल्टोवारके पहुचनेके पहले ही चल दो, नहीं तो जान बचनी मुश्किल हो जायेगी।"

मिचेल—"गिलवर्ट हेल और शोल्टोवार? ये कहाकी बलाए है? मैंने कभी इनको देखातक नहीं।"

ब्लेक—"शायद यही आर्मडेयर बना हो।"

मिचेल—'वह तो अभी उस पार गया है। और वह लाल बालोंवाला स्मिथ, जो एक नम्बरका शिकारी है, आज तीसरे पहर यहासे गया है। डेयर तो बड़ा ही अच्छा आदमी है। वह गावसे खर्चके लिये सामान लाने गया है।"

ब्लेक—"कुछ भी हो, उसके लौटनेके पहले ही चल देना चाहिये। ये दोनों बड़े भारी बदमाश हैं। खैरियत समझो, जो इन्होंने अबतक तुम्हारी जान नहीं ली। मुझे इसी बातका आश्चर्य है।"

मिचेल—"आपकी बातें मेरी समझमें नहीं आतीं। तोभी यदि आपको कुछ खतरा मालूम पड़ता हो, तो मोनाको यहासे हटा ले जाइये। मैं कल आपसे न्यूयार्कमें मिलूंगा। आज तो मैं नहीं आ सकता।"

ब्लेक—"तुम्हें आज ही और अभी चलना होगा।"

मिचेल—"मैं नहीं जाऊंगा, जा भी नहीं सकता।"

ब्लेकने देखा कि यह महा मूढ़ और हठी है। वे सारी भेदकी बातें इस युवतीके सामने बतलाना नहीं चाहते थे, और मिचेल अपनी हठ ठाने हुए था। इसी समय उन्होंने सामने मेजपर कोरोना-टाइपराइटर-मेशीन पड़ी देखी और पास ही एक काले रङ्गका स्याही सोख भी पड़ा पाया। मि० ब्लेकने झटपट वह स्याहीसोख उठा लिया। उसके नीचे किसी औरतके दस्ताने पड़े थे। मि० ब्लेकने उन्हें देखते ही कहा—"अच्छा तो एलिन-हेल भी यहीं है?"

मिचेलने लड़खड़ाती हुई आवाजमें कहा—"आप मिस फ्रैंककी बात कह रहे हैं? वह तो डेयरकी सौतेली बहन है। वह कल ही यहा आयी है।"

इसी समय किसीने पीछेसे कहा—"बस, खबरदार!" ब्लेकने पीछे मुंहकर देखा कि दरवाजेपर दोनों हाथोंमें एक-एक पिस्तौल लिये एलिनहेल खड़ी है। उसने कहा—"आज रातको तो मैं तुममेंसे किसीको यहासे न जाने दूंगी। मिचेल! उठो।"

ब्लेकने बड़े आश्चर्यसे देखा कि करोड़पति मिचेलने दुम दबाये हुए उसकी आज्ञाका पालन किया। मि० ब्लेकने चाहा कि अपनी जेबसे पिस्तौल निकालें। एलिन यह बात समझ गयी और आज्ञापूर्ण स्वरमें मोना-जेक्सनसे बोली—"मोना! तुम इन दोनोंकी जेबसे पिस्तौल निकाल लो।"

मोनाने ब्लेक और टिङ्करकी पिस्तौलें निकालकर सामने

मेजपर रख दीं। पलिनने दोनोंको अपनी जेबके हवाले किया। इसके बाद मिचेलने कहा—"यह क्या मामला है, कुछ समझमें नहीं आता।"

पलिनने कहा—"अभी समझ जाओगे, चुप रहो।" यह कह, वह बाहर चली आयी। इसी समय उसने उस कमरेमें ताला बन्दकर बाहर आकर एक अजीब तरहसे चीखनेकी आवाज मुहसे निकाली, जिसके थोड़ी ही देर बाद झीलमें डाड खेनेकी छपछपाहट सुनाई दी। ब्लेक समझ गये कि पलिनने हेल और चारको इशारेसे बुलाया है।

पुन भीतर आकर पलिनने कहा—"अब शीघ्र तुमलोगोंकी दवा होगी, घबराओ नहीं।"

मिचेलने पूछा—"यह क्या तमाशा है?"

मि० ब्लेक—"मैं सब समझ गया। तुम जिस समय डाक्टरके यहा गये थे, उसी समय गिलवर्ट हेल्ने, जो इस पलिनका स्वामी और परले सिरेका बदमाश है, तुम्हें देख लिया। उसने पता लगाया कि तुम किसलिये डाक्टरके यहा गये थे। पीछे उसको जब यह मालूम हुआ कि डाक्टरने तुम्हारे साथ डेयरको भेजना निश्चित किया है, तब वह डेयरको खोजता हुआ उसके पास पहुंचा और उसका मनी बेग चुरा लाया। इसके बाद उसने डेयरको टेलीफोनसे खबर दी कि तुम्हारा बेग मैंने पाया है, आकर ले जाओ। डेयर बेग लेनेके लिये उसके पास गया। उस रातको घना कुहासा था। हेलने देखा कि अकेले

यह काम नहीं होगा । इसलिये उसने शोल्टोवारको मिलाया, जिसका संसारके प्रसिद्ध प्रसिद्ध नगरोंमें कारबार होता है । बारने मिस-जैक्सनके सौतेले बाप मौरिस-लेण्डरको भी मिला लिया । मिस-जैक्सन अपनी माके दूसरी बार शादी करनेपर नाराज थी, इसलिये उससे अलग होकर रहने लगी ।"

मोना—"मैंने आपसे यह कब कहा ? आप कैसे जान गये ?"

ब्लेक—"सुनती जाओ । तुम्हारे सौतेले बापने अपनी बेइज्जतीके डरसे तुम्हारे लिये एक मकान किरायेपर ले लिया, पर असलमें यह डेयरको फसानेका फन्दा था । मिस-जैक्सन नाचनेके लिये बाहर जानेवाली थी, पर न जा सकी । उसके सौतेले बापने यहां आकर हेलसे सलाह मशवरा किये, जो मिस-जैक्सनने छिपकर सुन लिये । मिस-जैक्सनने थोड़ी देर बाद उस कमरेमें पहुंचकर देखा कि एक काले रंगका सोफा और डेयरका फोटो पड़ा है । वह फोटो लिये हुई दरवाजेपर आकर डेयरका इन्तजार करने लगी । पर डेयरके आनेके पहले ही मेरा सहकारी टिङ्कर इसके पास पहुंच गया । उसे वह अपनी बैठकमें ले गयी, पर उसने देखा कि यह तो दूसरा आदमी है । यह देखकर वह बहुत घबरायी और बड़ी रातको जब डेयर आया, तब तुरत ही टिङ्करको चलता किया । टिङ्करको रुखसत कर वह ऊपर आयी और हेलके साथ प्रतिवाद करने लगी । इसपर हेलने उसकी कलाई मरोड़ दी । वह चिल्ला उठी ।"

ब्लेक—"इसके बाद डेयरको अपनी मुट्ठीमें करके हेलने उसको न्यूजीलेण्ड भेज दिया और आप उसका टाइपराइटर लिये हुए मि० मिचेलका साथ देनेके लिये चला आया। मि० मिचेल या इनके नौकरोंने कभी डेयरकी शकल तो देखी ही नहीं थी, इसलिये ये यह नहीं जान सके कि 'यह नकली डेयर है या असली'। मि०मिचेल तो बनावटी नाम धारण कर न्यूयार्कके लिये रवाना हुए और इधर हेलके साथियोंने यूरोपके भिन्न भिन्न स्थानोंसे चिट्ठियां भेजकर लोगोंको भरमाना शुरू किया। ये सब चिट्ठियां डेयरकी मशीनपर यात्राके आरम्भमें ही छाप ली गयी थीं। इस तरह तुम कहा हो, यह तुम्हारे मित्रों और सम्बन्धियोंसे भी छिपा रखा गया।"

मिचेल—"पर मैंने तो घरपर कितनी ही चिट्ठियां भेजी हैं।"

ब्लेक—"वे कभी डाकमें नहीं छोड़ी गयीं।"

मिचेल—"पर ऐसा करनेमें किसीका क्या स्वार्थ है?"

ब्लेक—"हेल और बार तुम्हारे नामके दस्तखतसे काम लेना चाहते थे, इसीलिये वे इस तरकीबमें थे कि तुमको कुछ दिनोंके लिये इगलेण्डसे गैरहाजिर रखें। असल डेयरकी जगह तुम्हारा सेक्रेटरी बनकर हेलने तुम्हारा हस्ताक्षर भी जब चाहा, तभी ले लिया।"

मिचेल—"पर मैं सिवा अपनी खास चिट्ठियोंके और किसी कागजपर हस्ताक्षर नहीं करता था। तो क्या कागज भी बनाया गया है?"

ब्लेक—"तुम्हारा हस्ताक्षर ही प्राप्त करनेके लिये तो हेलने काले रङ्गका स्याही सोख निकाला, जिसपर स्याहीका निशान मालूम नहीं पडता, पर पीछे उसको गरम लोहेसे दबानेपर निशान उभर आता है। इसी तरह हेलने कितनी ही चिट्ठियोंपर तुम्हारा हस्ताक्षर उतारा और लण्डनके बाजारमे तुम्हारे शेयर और सौदागरी माल कौड़ियोंके मोल बेच डाले गये। यह सब शोल्टोबारके फायदेका काम हुआ। तुम्हारी हानि उसके लाभका जरिया हुई।"

मिचेलका दिल बेचैन हो गया। वह बैठा न रह सका, उठकर खडा हो गया। यह देख दूरपर बैठी एलिनने पिस्तौल ताने हुए कहा—"चुपचाप बैठे रहो।"

ब्लेकने कहा—"बार बड़ा होशियार है। इसने तुम्हारे शेयर आदि नहीं खरीदे। हा, बाजारमें हल्ला मच गया। बाजार गिर पड़ा, बस इसने उसका लाभ लेना शुरू किया। यह सब काम लैण्डरकी मारफत किया करता था। इसका इरादा था कि तुम्हारे लौटनेके पहले ही सब शेयर फिर बेच डाले। पर दुर्भाग्यवश तुम्हारे सम्बन्धियोंको चिन्ता हुई कि कही तुम सच मुच पागल तो नहीं हो गये, इसलिये उन्होंने मुझे बुलाया। मैं तुम्हारी तलाशमें यहा आया। मिस जैक्सन भी तुम्हारे लिये न जाने क्यों परेशान थी, इसलिये वह भी उसी जहाजपर सवार हुई जिसपर मैं था। लैण्डरसे वह आत्रे-डेयरके बहकानेके विषय में पहले ही झगडा कर चुकी थी, इसलिये इन लोगोंने उसपर

भी पहरा रखना शुरू किया। बार इसीके पीछे लगा था, पीछे उसकी निगाह मेरे ऊपर पडी। तभीसे उसने मेरे अनुसन्धानके मार्गमें बडे-बड़े रोड़े अटकाये, पर कल रातको मैंने इसके दलके बहुतसे आदमियोंको पकडवा दिया। यही निकल भागा और अब तुम्हें इस दुनियासे उठा देना चाहता है।"

यह सुनते ही मिचेलकी आत्मा कांप उठी। इतनेमें एलिन पिस्तौल ताने दौडी हुई वहा आयी और दांत पीसती हुई बोली—"बारको आने दो। वह अभी तुम्हारे इस जासूसको जहन्नुमकी हवा खिलाये देता है।"

ब्लेक—"मुझे इसी बातका आश्चर्य है कि तुम अभी कैसे जीती बची हो।"

मिचेल—"तुमलोग मोनाकी जान छोड़ दो। इसे जाने दो।"

इतनेमें ब्लेकको झीलमें डांड चलानेकी आवाज बहुत निकट मालूम पडने लगी। ब्लेकने कहा—"एलिन! अब देखा चाहिये, कौन किसको पछाडता है? तुम्हारा स्वामी अब आया ही चाहता है।"

एलिन कुछ जवाब देना ही चाहती थी, कि इतनेमें मि० ब्लेक उसपर बाजकी तरह झपटे। उसने दनसे गोली छोटी। ब्लेकने भी पिस्तौल दागी। एलिन भाग चली। ब्लेक उसके पीछे लगे। इतनेमें बार भी दौड़ा हुआ वहां आ पहुंचा। उसने भी बिना निशाना किये गोली दाग दी। मि० ब्लेकने जो एलिनका पीछा किया, तो वह दौड़कर इसी समय उसकी